

प्रेम का विषाद (द सारो आन लन)

मध्या बेला मे गौरयो के बलख ने,
पूण चन्द्र ने, पूरो आकाशी गगा ने,
सामजस्य-स्वरो मे वृक्षो के मर-मर ने
मानव नी प्रनिमा विलुप्त कर दी थी,
मानव की पुवार भी ।

उठी गग बाना जिनके ये अघर गुलात्री और मानमी-
एक बूद आसू मे ममृति की निराटता मिमटी मानो—
भाग्य महानाविव का ले,
जा घेडा नेकर क्षुब्ध ममुद्रो की यात्रा को निक्ल पडा हो
स्वाभिमान उस परम वीर का ले,
जो अपने अभय साथियो के मँग मगर, मे जूया हो ।

उठी, और उसने उल्ले ही बलख-मध्या,
गग गगन मे चढ़ते चदा,
वृक्षो के अवसाद नरे हर-हर, मर-मर ने
मानव की प्रनिमा प्रस्थापित कर दी
मानव की पुवार नी ।

जब तुम बूढ़ी होना

(बेन थू आर ओल्ड)

जब तुम होना रूटी मन-मे वाला वाली

जिमकी जाग्या म अँघियाली,

शीघ्र हिलाती पैठ जंगीठी के आगे तुम

बम पुस्तक का लेना, धीर-धीरे पढना

और मोचना कभी तुम्हारी आँख कितनी नम-नम था,

अपनी पनना की छाया म कितने गहर मम छियाण,

कितने ही थे जिह तुम्हारे जानन की

प्रसन मुद्रा क क्षण प्यार थे

कितन थे बलिहार तुम्हारी मुदगा पर

पूठा-भच्चा प्यार दियातर

दिनु एक था जिमन तुमका प्यार लिया था

तुमम अपन प्राणा का मह्यात्री पातर,

और तुम्हार परिवर्तित हाते मुग पर

त्रिप्रित विपाद का प्यार लिया था,

और देखन अगारा के निरट भुसाकर जागें

बहना अम्फुट स्वग म, भारी मन म

हाय, प्यार कितनी जन्दी जीवन म भागा

दिया मामन पत्रत की चौटी पर चदने

और छियात अपना मुँह ताराउनिया म ।

रजत पक्षी (द हाइट बर्ड्स)

मेरो प्रेयसि ! क्या रजत पक्षी हम होते
और तरते फेनिल सागर की लहरा पर ।
हम उल्काजा की तपटा से घबराए ह,
हाय, न जान कब व बुझकर गायत्र हागी।

अवर मे छिऱकी लानी मे नील मिनारे ने
जो किरणे फैलाई है
लटक क्षितिज को वे छ्ती है,
और उन्होंने, मेरी प्रेयसि, मेरे और तुम्हारे अतर म
ऐसा जवमाद जगाया ह जो शात नही होने का ।

ओम बिंदु से लदी कुमुदिनी औं गुलाब की
स्वप्नित पगुरियो से तद्रा टपक रही ह,
मेरी प्रेयसि, ध्यान करो मन उन उल्काजो की
लपटो का जो कि गगन म चरती जाती,
नीन सितार की किर्णा का,
जो कि ओम की गिरनी बूँदा म नीचे का लटक गई है,
क्याकि चाहता हूँ तुम औं मैं
रजत-पक्षिया मे परिवर्तित
फेन-नहर पर तिरते फिरते ।

मेरी जाखा म कितने ही द्वीप घूमत,
 फेन-लहर से धुलते कितने सिंधु विनारे,
 समय जहा पर निश्चय हमका विसरा देगा,
 और हमारे दास विपाद न आ पाएगा,
 जहा बुभुदिनी औ' गुलाब के अश्रु न होंगे,
 और न उटका, नील सितार की
 जबसाद जगानवाली लपटें किरण ।
 मेरी प्रेयसि, वादा वहा पर, फनिल सागर ती लहरा पर
 भूना हम-तुम भूला करते, रजत पक्षेरा-जोडा बनकर ।

वृद्ध पेशनर का विलाप (द लेमेंटेशन आन द ओल्ड पेशनर)

अब दिन ऐसा
टूट पेड तले हो तरेके खडे
बचाता हूँ अपने का में वर्षा से,
किन्तु किमी दिन
मचसे जागे, निक्कट अंगीठी के
मेरा आसन होना था, हर बैठक मे
जिममे चर्चाएँ चलती थी राजनीति पर
या कि प्रीति पर,
हाय, समय ने अब तो मेरी शकल बदल दी ।

नौजवान पड्यन खडा करने की
तैयारी मे शम्न इकटठे करते चोगी चोरी,
गुप्तक मिरफिरे बुद्ध
मानव-अत्याचारा पर आखें लाल निकाल रहे है,
मं तिसूरता बैठा हूँ उस गए समय को
जिसने मेरी शकल बदल दी ।

टूट तर की ओर उठाकर आग
नही कोई भी औरत देखा करती,
फिर भी जिन परियो का मैंने प्यार किया था,
उनकी शकलें मुधि म बसती,
जी म जाता है कि समय के मुह पर धूकूँ
जिमने मेरी शकल बदल दी ।

चित्त-वृत्तियाँ

(द मूड्स)

पूरी जली मोमवत्ती-सा
खड़ा काल प्रभहीन पडा है,
और बड़े वन-पवत भी तो
काल-बद्ध ह काल-बद्ध हैं,
अगर अग्नि-सजात वक्तियो के
सामूहिक महा ध्वस मे
कोई छोटी एव गिरी औ नष्ट हो गई
तो क्या ? तो क्या ?

प्रेमी कहता है कि उसके दिल में एक गुलाब है

(द लवर टेल्स ऑफ द रोज इन हिज हार्ट)

वे मज चीजें जो बदसूरत ह, टूटी हैं,
वे सब चीजें सड़ी-गली जो, घिसी पिटी जो,
गली किनारे खड़े हुए बच्चे का रोदन,
कूड़ा ढोती भसा-गाडी की चूँ-चर-मर,
कीचड़ छिटकाते किसान के कदम गँवारी,
भट्टे-भारी—

ये सब के सब

अत्याचार तुम्हारी सूरत के प्रति बगते
जा गुलाब सी खिली हुई है मेरे दिन की गहगई में ।

बेटगी चीजों का अत्याचार

बडा इतना है धन्द नहीं कह पाते,

नये सिरे से उह बनाने को मैं पागल

अलग एक मरकत-टीले पर जा बैठा हूँ,

जल-थल-नभ नव-निर्मित करके

मैंने मोन की मजूपा में रक्खा ह,

क्याकि तुम्हारी सूरत जो मेरे सपना की,

वह गुलाब-सी खिली हुई है मेरे दिन की गहगई में ।

मछली (दृश)

भने छिपा तुम,
चंद्र जन्त जब हो जाता है,
ज्वार और भाट की पीत बरन लहरा मे,
आनवाले दिन के लागो से
यह बात छिपी न रहेगी,
तुम पर मैंने जपना जाल कभी डाला था ।

जौ' कितनी ही वार
रेशमी रक्त-जारिया की
फनागर निकल गई तुम ।
व माचेंगे, तुम बठार थी, तुम निदय थी
नौ कितने ही कटु शब्दा म
वे तुम पर ताहमत थापेंगे ।

बूढ़ी माँ का गीत (द साँग आउ द ओल्ड मदर)

मैं तटके उठती हूँ,
भुक्कर चिन्गारी पर फूँक लगाती
बीज अग्नि का दहक न जब तक
नाल-लाल अगारा धनता ।

जब तक फटा ग्यादती, झाडू देनी,
केक पकाती हूँ मैं,
अगर म तारे पनकें झपकाने लगते ।

बहुएँ दर नलन रिस्तर में साती रहती
स्वप्न दपनी बीसा फीता
चाली-चाटी में नोहेगा,
दिन उनका प्रवागी म गुजरा करता है,
एफ हवा के पारे ने जनकें क्या वियुरी,
उनको आह भरने का सामान मिन गया,
रेजिन में बटो हूँ ना मैं काम करूँगी,
यदि न करूँ तो
ग्रीन अग्नि का रुपकर ठडा हा जाएगा ।

नारी का हृदय (द हार्ट आन द वुमन)

क्या परवाह मुझे है उम छाट कमरे की
जहा प्राथना की जानी थी
जहा बटा आराम मुझे था
उसने मुझको अधकार से किया इशारा
जौ' अब मेरी छाती उसकी छाती पर है ।

क्या परवाह मुझे है मा की दख-रख की
या उस घर की जहा सुरक्षा थी
मुपास था,
मेरी अलवावलि की पलुंगियो की छाया
बचा सकेगी हमका भीषण तूफाना म ।

हमे छिपा लेनवाली ओ अलवावलिया
आ मेर रम भीगे नयना ।
जीवन और मरण की सीमाआ का अब म
पाए कर गई
मेरी छाती मे उसकी छाती की धडकन
समा गई मेरी मास उसकी साना म ।

सहेली की विदा

(द लर मोर्स फार द लास आव लर)

सुदर मुझको मिली सहली
वासती भ्रू और जचचल हाथा वाली,
भूरे-भूरे वाला वाली,
मैन की कल्पना अततोगत्वा मेरी
पूव निराशा सफन प्रेम मे परिणत हागी ।
एक दिवस उसने मेरे अन्तर मे झाका,
देखा वहा तुम्हारी प्रतिमा प्रस्थापित है,
और सहेली मेरी मुझमे विदा हो गई
रोती-रोती ।

प्रेयसी के लिए कुछ पक्तियाँ

(ही गिंस हिज़ विलयड सरटन राइम्स)

एक सुनहरी पिन से अपन बाल बिठाला
और बाध लो हर बिखरी लट,
मेर दीन हृदय ने यह तुक्बदी की है,
कितने दिन, कितनी रातों तक
उसन इसपर काम किया है,
तब अबसाद भरी सुपमा का सृजन हुआ है,
पूर्वकाल के युद्धा के ध्वसावशेष से ।

तुम्हें सिफ अपने मोती से पीले पीले हाथ उठाना,
और अपने लबे वाला का बाध एक उच्छवास छोडना,
सब पुरुषा के दिल मे धडकन हागी
ज्वाला नभक उठेगी ।

भूरी बालू के तट को
फिर फिर धाती फोनोज्ज्वल लहरें,
ओस चुजाते नभ मे ऊपर चढते तार
इसीलिए ह,
जहा नही भी चरण तुम्हार पडें
करें पथ मे उजियाला ।

प्रेमियो की घाटी

(ही टल्स आर ए बेली फुटा आर लवर्न)

मैन देगा स्वप्न, खडा हूँ मैं घाटी म
वाह चारा आर उठ रही,
क्याकि प्रेयसी औ' प्रियतम के सुगमय जाटे,
जहा सडा हूँ पास उसी के, गुजर रह ह ।
आर स्वप्न म ही मैं यह दखा

मरी पूव प्रयमी

दर पाव वन स निरती ह—

बादल-मी पीली पलका के नीचे

स्वप्न-भागन मी नीती-नीती आव ।

जो' मैं सपन म चिल्लाया,
ओ प्रेयसियो, अपन प्रेमी युवका म कट दा
व अपन गीत तुम्हारे घुटना मे जनित्र कुनाएँ
आ' तुम उनरी जायें टर दा

अपनी घन अतरायलिया म,
क्याकि प्रेयमी मरी उनका आ दिव रई
तारि मुसडा उन्ह न मुदर जान पडेगा
छान भने के डारें मर घाटिया जान की ।

अनिद्य सौंदर्य
(ही टेलम आव द परफेस्ट च्यूटी)

आ, प्रादल-सी पीली पलक,
स्वप्न गगन सी नीली आखें ।
अपन छदो में अनिद्य मादय
मूत करने की धुन में
काम रात दिन करनेवाले कविगण
सहज पराजित हात
नारी की चिनबन से
नभ में निष्प्रयास चलते उडगण से ।
इसीलिए मेरा अभ्यतर भुका रहगा
प्रभु के द्वारे काल क्षय तक
क्योंकि जोस की बूदें तद्रिल टपक रही है
निष्प्रयास चलते तारो के आगे
और तुम्हारे आगे ।

प्रेयसी के निन्दक

(ही धिक्म न्यान दोज हू हैव स्पोकेन इविल आव हिज विलवेड)

आखा पर पलका को आयी झुकी हुई रख
अपनी अलकावली लाल दो,
औ' साचो जो बडे कहे जाते हैं
वे कितने दभी हैं,
और उन्हेने मभी जगह पर, प्राण,
विरुद्ध तुम्हारे किनना विप उगना है !
नेकिन तुम यह गीत एक पलडे मे रखना
और दूसरे मे उनना जा बटे कह जात ह
उनके बडे दभ को,
और देखना किधर वजन भारी पडता है ।
अपनी एक आह मे मीने गीत रचा यह,
उनके बच्चो के बच्चे जत्र इमे पडगे, यही कहगे
झूठ बव गए किनना उनके बूटे दादे !

पुराने मीतो को न भुलाने की प्रार्थना
(द लवर प्लीड्स विद हिज फ्रेंड फार ओल्ड फ्रेंड्स)

माना मैंने, प्राण,
तुम्हारे लिए आज दिन शानदार है,
जनता से उठकर आवाज़, नये मिश्रण
नित्य तुम्हारा अभिनदन करते रहते हैं
मत अनुदार बनो, मत गव करो तुम इसपर
सबसे ज्यादा प्राण, पुराने मीतो के बारे में नाचो।
नूर समय की बाढ किसी दिन आएगी ही,
और तुम्हारी सब सु दरता साथ बहाकर ले जाएगी,
सत्र जाया मे,
बितु न उनमें शामिल हागी मेरी आखे।

काश प्रेयसी मर गई होती

(ही मिशेज हिज़ प्रिलवेड वर डेड)

अगर पडी तुम होती मरकर, ठडी होकर,
औ' प्रकाश पच्छिम मे पीला पडकर
गायन होता जाता,
तुम आती इस ठीर और निज शीश झुवानी,
और तुम्हारी छाती के ऊपर मैं अपना सिर धर देता ।
तुम अस्फुट स्वर मे कुछ मीठे शब्द बोलती,
क्षमा मुझे कर देती, क्याकि मरी तुम होती ।
यद्यपि तुममे वय पशियो का इच्छा-बल,
तुम न भागती जठ जट्दी मे,
वितु समचती लटें तुम्हारी
गूरज, चाद, सितारा के संग उनझी-पुलझी,
प्रेयसि, काश वफन ओढे तुम
गढी हुई धरती मे होती,
औ' पच्छिम मे
एव एव वर, पीने पडवर नभ के तारे बुझते जाते ।

धैर्य बँधाने की निरर्थकता

(द फाली आन वीग स्मॉटेंड)

जो टृपालु मुझपर सबदा रहा करते ह
कहा उन्हांन बल यह मुझसे,
'सुनो, तुम्हारी प्राण प्रियतमा के सिर पर अब
नाई-कोई बाल सफेद नजर आत ह,
औ' आखा के नीचे चाडी चाडी झाड
पडती जाती ।

समय सिखा ही देता है सब कुछ सह जाना,
गो यह तुमको अभी असभव जान पडेगा,
इस कारण तुमको केवल धीरज रचना है ।'
मेरा अतर नदन करता,
'नही, मुझे रत्ती भर, कण भर धय नहीं है,
समय उसे फिर से मु दरता दे ही सनता,
क्योकि ओज की वह प्रतिमा है,
उसके जदर एन आग है,
जब वह चलती, उसके चारा आर मचलती
औ' तेजी के साथ भभकती ।
तेज कहा था तब ऐसा उसकी आखा मे
जब वसत की सारी मादकता उनसे
झाका करती थी ।

जो मेरे मन ! ओ मेर मन ! एक बार वह
अपने सिर को झटका भर दे,
तू जानगा, उनके धय बँधान का कुछ अथ नहीं है ।

पुरानी याद (ओल्ड मेमोरी)

अरी कल्पने, जत्र दिवनात पुरानी यादें
जाग्रत करता, उड जा उमके पास और कह,
'शक्ति तुम्हारी वज्र-कठार, कुमुम-कामल है,
वह उठान है उमम जिममे एक नए युग
का जारभ निया जा सकता, जिसमे आएँ
याद रानिया जिनका कल्पित किया गया था
धुर अतीत मे, पर यह आधी शक्ति तुम्हारी ।
यौवन के लव वर्षों मे उमन जपना
हृदय मथा था , किसन समथा था वह सारा,
औ' कुछ उम सत्रमे क्यादा भी, व्यय जायगा,
और प्यार के शब्दा म कुछ अय न हागा ।'
इतना काफी , तनी प्यार का दापी हम
ठहरा सकत हैं,
जत्रकि हवा का पहले हम दापी ठहरा दें ।
और, अगर, कुछ कहन की आवश्यकता हो,
ता भी कहना नहीं चाहिए,
दूर मरुत होगा ऐमा उन बच्चा क प्रनि
जा अनजाने वहक गए ह ।

पूरे दिल से प्यार न करना (नेर गिव आल द हार्ट)

प्यार कभी मत अपने पूरे दिल से करना,
प्रमदाएँ परवाह न करती तिनके भर भी
उम प्रेमी की जो उनके प्रति पूण समर्पित,
वे न सोचती सपने मे भी, पहले चुवन
और दूसरे मे आक्षेपण घट जाता है—
क्याकि जगत म जितनी भी चीजे प्यारी है
क्षणभंगुर है, स्वप्नमयी है,

एक मद मुसकान ममय की ।

यारो, अपने पूरे दिल को दे न बैठना ,
ये सब कामल अधरो वाली बतलाएँगी,
वे उसको दिल देती जो उनके संग खेले ,
और खूब खेले जो उनसे, कोई ऐसा हो सकता है
जो कि प्यार म अधा, गूँगा हो, बहरा हो ?
जा यह कहता, उसो इसका मूल्य चुकाया,
क्योंकि दिया दिल पूरा उसने, पर क्या पाया ?

नगी डाले
(द निदरिंग आनद नाउज)

अम्फुट स्वर में चाद कह रहा था
जब कुछ वन की चिड़िया में मैं चिन्नाया,
'जहाँ वही भी चाह टिट्टिभ वान,
कुररी शार मचाए
में व्याकुल हूँ, मधुर वग्ण, मुटुमार तुम्हारे
गद पड मेर वाना में,

क्याकि रास्त अतरहित ह
मेर मन के लिए वही पर जगह नहीं है।
पीला चाद निदार पवन पर लेटा था
में भी साया एसाकी जलघार दिनार।
शीत समीरण के चलने स
डालें नगी नहीं हुई हैं,
डालें नगी हुई कि उनरा
मैंने अपना म्यप्न सुनाया।

नान मुझे वन-पय भुतनिया जिनमे आती,
निवन शील की गहराई स
निर के ऊपर मुक्ताआ का ताज मंगार,
ऊन वातन का तक्ला हाथा म तकर,
अघरा पर मुमवानें, जिनका भेद न म्युनता।

ज्ञात मुझे घाटिया कि जिनमे चदा डलता
परिया जिनम सीधे-उट्ट चक्कर देकर
नतन करती जगदि चादनी मद्धम पडती ।
ज्ञान मुझे ह द्वीपा वे तट

पीली पीली फेन-लहरिया जिनका धोती,
जिनमे परिया पाव भिगानी ।

शीत समीरण के चलने से
डाले नगी नहीं हुई हैं,
डाले नगी हुई कि उनको
मैने अपना स्वप्न सुनाया ।

ज्ञात मुझे ह देश निंदारे जहा मुनहरी
जजीरा से बंधे हुए हसा के जाडे
चक्कर देकर उडते, उडते गाते जाते ।
एक बहा पर रानी-राजा घूम रहे है,
हस-गीत ने इतना उनका

हर्षित और हताश किया है,
वे जधे ह वे बहरे है
हस गीत ने इतना उनका ज्ञान दिया है ।

उमी जगह वे घूम रह ह,
और प्रस दर प्रम गुजरते चले गए है ।
मुचको हे यह ज्ञात, नात यह टिट्टिभ को भी,
कुररी को भी, जा बसने जलधार किनारे ।
शीत समीरण के चलने से
डाले नगी नहीं हुई हैं,
डाले नगी हुई कि उनको
मैने अपना स्वप्न सुनाया ।

आदम का शाप (ऐडम्स कर्स)

ग्रीष्म समाप्त हुआ था, हम तीना बठे थे—
वह मुदर-मुकुमारी नारी, मित्र तुम्हारी,
आ' तुम औ' मैं—कविता की चर्चा करते थे।
मैं वाला या, 'एक पक्ति लिखने मे घटा

लग सकते ह,
फिर भी यदि वह क्षण मे उतरी हुई न लगती
शब्दा की वह सत्र उधेड-बुन प्रेमतलब है।

इसमे ता यह जच्छा होगा, कमर झुकाए
फग रसोई का रगड या पत्थर ताडे
जा हर दिन बूढ मजदूर किया करत है।
मीठी धनिया साथ मिलाकर मुग्ररित करना
इन सत्र कामा से मुश्किल ह, फिर भी इसका
स्कूल मास्टर और बकर और पादरी—
शार मचानेवाले मारे—जिनका सतो
के शब्दा म दुनियादार कहा जाता है—
बकारा का धधा कहते।'

इसमे ऊपर
वह मुदर-मुकुमारी नारी जिनकी खातिर
बहुत मिलगे, दिल मे सारा दद प्रमा लें,
आर जान ल उनकी बाणी मद-मधुर है,
वाली, 'औरत हासर ही यह जाना जाता
यद्यपि इनका नहा कही कार सिपलाता,
हमका मुन्दर बनन को श्रम करना पडता।'
मैं या जाना, पतन हुआ जब से आदम का

कोई अच्छी चीज़ नहीं है

जिसे न मेहनत करनी पड़ती ।

ऐसे भी प्रेमी इस दुनिया में गुज़रे ह

जो कि प्रेम को उच्च काटि का

ऐसा शिष्टाचार बनाने के हामी थे,

आह भी ले तो वे दीर्घ त्रिद्वाना-से

औ' वे इसके लिए मिसालें पेश कर सः

सुंदर और पुराने ग्रथा के पन्ना में ,

लेकिन अब ऐसा लगता है

यह बेकारा का मीदा है ।'

नाम प्रेम का जाते ही हम चुप हो बठे,

हमने देखा दिन की लाली डूब गई है

और गगन के मरकत-नीलम के कपन में

चाद उगा है, जैसे कोई सीप खियाया ,

तारा-से द्वीपों के चारा ओर मचलती

जिसे, समय की लहरों ने उठ उठ, गिर गिरकर

इतना धोया है इतने दिन, इतने माला,

वह बेचारा टूट गया है ।

मैं कुछ कहना चाह रहा था

जिसे सुन मक, प्रेयसि, केवल कान तुम्हारे

तुम सुंदर हो औ' मने यह कोशिश की थी

प्यार कर सकूँ तुम्हें पुरानी उच्च कोटि की

प्रीति-रीति से,

जिसमें सारा कुछ शांति हो ,

फिर भी आज हमारे दिल टूटे-हारे ह

जैसे यह खोखला चाद है

जिसपर करते व्यग्य गगन के ये तारे हैं ।

बूटो से सुनी

(द ओल्ड मेन ऐडमायरिंग देमसेल्स इन द वाटर)

मैंने बूटे, बहुत पुराने लागा से यह
मुन रक्खी है,
'दुनिया फानी,
या हर चीज बदल जाती है,
एक-एक कर, रात्रा, सब के
जाने की वारी आती है।'
उनके हाथ नहीं ये, पजे,
उनके घुटने मुड़े मरोड़े,
जमे काई काँट वाला पेड पुराना
नदी किनारे,

मिन्न थ गजे ।

मैंने बूटे, बहुत पुराने तोगा मे यह
मुन रक्खी है,
'दुनिया फानी,
सुदर से सुदर भी ऐसे बह जाता है
जैसे पानी ।'

बीहड़ वन (द रैगेड बुड)

आओ जल्दी चलें जहा पर बीहड़ वन है
शील किनार,
जिसमे मद-चरण मृग, उसकी मगी सहली
आह भरते,
जब पानी वे अदर अपनी परछाई व
दखा करते—
काश छोडकर हमका - तुमको
जग मे कोई प्यार न करता ।

जब सूरज उठ अपने सुवरन मुख मडल से
झाका करता,
तब अवर की चन्द्रमुखी रानी, अभिमानी,
जिसके तन से कचन शरता,
रजत चरण की, नभ मे तिरती, कभी सुना है,
क्या है कहती—
काश, छोडकर हमका-तुमको
जग मे कोई प्यार न करता ।

आजा जल्दी चलें जहा पर बीहड़ वन है
शील किनार,

और किसी प्रेमी तो रहने वहा न दूँगा,
चिल्लाऊँगा माय-भरारे—
विश्व विभव मेरे हिस्से की, कचन-केशी,
तुमने मुझका क्या न दिया है,
हमको-तुमको छोड़ किसी ने
रभी न जग मे प्यार किया है ।

ज्यादा दिन मत नेह लगाना

(ओ इ नाट लव टू लाँग)

प्राण प्रियतमे, ज्यादा दिन मत नेह लगाना,
ज्यादा दिन तक नेह लगाकर मैंने सीखा है पछताना,
मैं ऐसा वे फेशन का माना जाता हूँ
जैसे कोई गीत पुराना ।

एक इस तरह थे हम यौवन के वर्षों में—
हाय, कहा वह गया जमाना—
क्या उमरे मन, क्या मेरे मन,
इस असभव था अलगाना ।

नेकिन पतल म बदल गई वह—
ज्यादा दिन मत नेह लगाना,
बना तुम भी हा जाओगे वे-फैशन के,
जमे कोई गीत पुराना ।

नारी जिसका गीत वृद्ध होमर ने गाया (अ बुमन होमर संग)

जब जवान था

तब यदि उसके पास चला कोई आता था,
मैं सोचा करता था, 'प्यार उसे करता है,'
और घणा से, भय से कपित हा जाता था,
किंतु निकट से उसके कोई
बिना प्रभावित हुए गया तो
यह लगता था जैसे उसकी हुई उपेक्षा ।

उस पर मैं लिखता था, रचनाएँ करता था,
और आज ढल चली उमर है,
अब मैं सोचा करता हूँ, अपने विचार को
मैंने इतनी गहराई तक पहुँचाया है,
आनेवाला समय कहेगा,
'विप्रित है उसके दण मे
जैसी थी वह तन मे, मन मे ।'

जब जवान था

उसके लोह मे अगारे की गर्मी थी,
सहज गव से जब वह चलती थी नगता था
जसे बादल पर चलती हो,
जैसे वह नारी हा जिसका गीत
वृद्ध होमर ने गाया,
जिसे देरावर जीवन औ' माहिय नगा था
जसे वह प्रभ-स्वप्न-समाया ।

शब्द (वर्ड्स)

क्षण भर पहने यह विचार मन म आया था
मेरी प्यारी समझ न भक्ती
मैंने जो बुद्ध किया, वरु गा
इस अध विक्षुब्ध देश में ।'

घड़िया भार हो गई नेकिन,
साफ विचार हुए फिर मेरे
करके याद कि जो कुछ मुझसे हो सकता था
किया, रह मदेह न घेरे ।

बरस दर-बरस में यह चिल्लाता आया हूँ
'मुझे अततो गत्वा मेरी प्यारी समझी,
क्योकि आ गया हूँ अब मैं अपनी ताकत पर
और शब्द चलते हैं सकेता पर मेरे ।

मुझ शुरु से अगर समझती मेरी प्यारी,
हो सकता है मैं रहता रीते का रीता
शायद शब्द विचारा को मैं दूर हटाता,
सुख से खाता-पीता, जीता ।

दूसरा टू वाय नहीं था (नो सेकेंड टू वाय)

क्या इलजाम लगाऊँ उसने

मेर दिन बर्बाद कर दिए
या उसन इम तरफ भले भोल लागे का
भटकाया है ताड-फोड-हत्या करने का,
या कि बडा स कहा, चलें छाटी गलिया म
यदि सपना के साथ बलेजा भी हा उनमे ?
ले दिमाग जा आभिजात्य हान क वारण

सहज आग-आार हा उठे
ल सुदरता चढी चाप-नी,
जैसी इन युग म स्वाभाविक नहीं रह गई
ल स्वभाव अभिमानी, एकाकी, कठारतम
बभी नहीं यह मभव था वह ज्ञान रह नक ।
बनी धातुआ की एनी वह

और, भला, कर ही क्या मरती ।
यही गनीमत है कि दूसरा टू वाय^१ नहीं था,
अग्नि ध्वन्ल वरुन म उमका दर न सानी ।

^१ इ वाय नडातर तो इ-न क वाग उ । एह अग्नि-वर्ण हा एग विसरुह म म
क वारण मका दुर था ।

पुनर्मिलन (रिकासिलिण्डन)

सभव है कुछ लोगो ने इलजाम लगाया
हा यह तुम पर, जब मेरे काना को बहरा,
मेरी आखो को अधा कर,

जैसे बिजली के गिरन से,
दूर गई तुम मुझसे तब तुम साथ ले गई
वे कविताएँ जो उनको आनदित करती,
और कुछ नहीं रहा कि जिसपर गीत लिखूँ मैं,
छोड़ पुराने राजो ताजा, तलवारो का—
वे सारी अध भूली चीजें—एक तरह से
जा कि तुम्हारी ही सुधिया थी अन्य न्य म ।
लेकिन अब हम, क्योंकि आज भी दुनिया बसी
जसी बल थी,

जब हम पर हसने के, रोने के दौर ह
उही ताज, तलवारो ढालो को

उनके ऊपर फेंकेग ।
लेकिन, प्यारी, अब तुम मेरे आलिंगन से
अलग न होना, जब से मुझका छोड़ गई थी
मेरे मन को कभी, कही भी शांति नहा थी ।

जो कठिन है उसके लिए आकर्षण (द फ्रॉसिनेशन आर हाट इज डिफिकल्ट)

जो मुश्किल है उसके आकर्षण ने मेरी
नम-नाडी के मार रम को सोख लिया है,
और हृदय का स्वाभाविक सतोष,
सहज आनंद निवाल कहीं फँका है ।
बुद्ध कुरेदता है मेरे कल्पना-अस्व^१ का—
जसे उसके तन में पावन रक्त नहीं है,
और न कभी कूदा करता था ओलिम्पस^२ पर,
बादल से बादल के ऊपर—जिमसे वह चाहता
कि काँटे खाकर काँपे, जोर लगाए,
स्वेद बहाए, हचका दकर बूढ़े-बोयी
गाड़ी गीचे ।

जायें जहन्नुम में वे नाटक
जिनका सनर तगह खड़ा करना पड़ता है,
कूट मूढ़ जो दिन-भर मिर खात रहते हैं,
अभिनय-अभिनेता मबधी घघे-पचड़े ।
मैं खाना हूँ कमम, सपेरा तो होन दो
देगु^३ ररना कौन तबेन में पाड़े को ।

१ मूलाना दन कथा क मनुसुर कना की देखियो का परदार घोडा पामस ।

२ मूलाना दवनापा का निवसु-मधन ।

मधुगीत (ए ड्रिंकिंग सॉंग)

अधरो पर आती है मदिरा,
आखो मे आता है प्यार,
बूढे हो मरने के पहले
पडना है अपन तो पल्ले
इतना ही जीवन का सार,
में शराब का जाम उठाता,
तुमको अपने आगे पाता,
देता उसको तुम पर वार ।
अधरो पर आती है मदिरा,
आखो मे आता है प्यार ।

समय से ज्ञान होता है
(द कर्मिग आर रिजिडम विद टाइम)

तर म अनगिन पत्त होत,
मूल, मार हाता है एव,
मैने पत्ते - फूल दिखाए,
यौवन क सब दिन चुठनाए,
अप मुलका बूढा होन दा
हाथा म ले मूल - विवन
तर म अगणित पत्ते हात
मूल मार, हाता है एव।

ममर म पान हाता है

ये वादल है

(दीज़ आर द क्लाउड्स)

अस्तप्राय सूरज का घरे जो, है, वादल,
उसके नेत्र ज्वलत बद करने से प्रोज्ज्वल ।

कर जाते जो सबल

निबल अनुकरण उसी का करन लगते,

करते जाते, जब तक ऊँचा उठा

नहीं नीचे गिर जाता,

जब तक जो है एक, नहीं खडित हो जाता,

जब तक सब कुछ पट्टा होकर

नहीं धरातल एक सब-साधारण पाता ।

इस कारण, हे मित्र

तुम्हारा महत्वाय यदि पूण हो चुका,

औं' ऐसी बात होती है, तो तुम इसका

निश्चय समझो—

तुम महानता के अधिकारी,

तुम्हें खेद इसका हो सकता

नहीं तुम्हारा है कोई उत्तराधिकारी ।

अस्तप्राय सूरज की घरे जो, हैं वादल,

उसके नेत्र ज्वलत बद करने से प्रोज्ज्वल ।

एक मित्र की बीमारी
(ए फ्रेंड्स इलनेस)

बीमारी में, एक तराजू के पलड़े में
पड़ा हुआ है,
देता मैं उसे ध्यान में,
सारी दुनिया एक लपट में
अगर कायले-मी जल जाए,
तो भी काई वजह नहीं है मन धवराए,
मैं अब यह देख लिया वह तुल सकती है
एक अकेले आत्मवान स ।

सब चीजे मुझे प्रलोभन दे सकती है
(आल थिंग्स फैन टेम्प्ट मी)

बुद्ध भी ऐसा नहीं प्रलोभन में मैं जिसके
कविता करना छाड़ न सकता
किसी समय नारी का मुख ही बड़ा प्रलाभन
था, या उससे घटकर—सतही आवश्यकता
मेरी मूढा से परिचालित मात भूमि की
पर अब इस अभ्यस्त काय के करने में ही
आसानी अनुभव करता हूँ ।

जब्र जवान था

ऐस कवि का जो न सुनाता अपनी कविता
दस जोशाखराश से जैसे उसके कपटा
के अदर तलवार छिपी हा, टका न देता
लेकिन अब में, कर सकता यदि अपने मन की,
इतना ठंडा, गूँगा, बहरा बनकर रहना
जितनी जल से बड़ी देर की निकली मछली ।

पराजित मित्र

(टु प फ्रेंड हूज वर्क हेज नम टु नधिग)

अब तो सारा सत्य प्रकट है
तुम्ह एक निलज्ज घृष्ट से
हार मिली जो
मष्ट मार स्वीकार करो तुम ।
स्वाभिमानिया की वगन तुम
कने उससे बराबरी करने को नीचे
उतर सकागी,
जो, यदि साप्रित भी हा जाए
वह बूठा है,
गमिन्दा हो नहीं सकेगा
अपनी नजर्रा या पडोसिया की नजर्रा म ।
गहन विजय से सहन,
उमी मे पली हुईं तुम,
पीठ फेर ला,
और एक पापाण-वक्ष के अदर
एक प्रमन्न बीन-नी
निसके तारा पर विक्षिप्त उँगलियाँ चलती,
मष्ट मार कर मन्न रटा तुम
क्याकि काम यह दुनिया म मन्न मुस्किन ह ।

जब हेलेन जीती थी

(हो न हेलेन लिब्ड)

हम हताग होन पर चिल्लाया करते हैं,
दुनिया वाले मामूली-मामूली बाता,
या कि गार-गुल वाले सस्ते

आमोदो के कारण अक्सर

अपनी पीठ फेर लेते हैं

सुदरता से,

जिसे जीतकर हम लाए हैं

जग के भीषण सघर्षों से,

फिर भी यदि हम

उस ऊँची मीनारा वाले गड के अंदर

चलने फिरनेवाले होते

जिसमें हेलेन—वह अर्निछ यूनान सुदरी—

औ' उसके प्रियतम रहते थे,

टवाय नगर के अगणित लोगो के समान ही,

कभी-कभी ही उसे देखते,

कभी-कभी ही एक शब्द उससे कह पाते ।

मोर
(पीकार)

उसको धन क्या
जिसने अपने नयना के
मानाभिमान से
एक वटा-सा मोर बनाया ।
वात-प्रताडित, पत्थर भूरी
पढी-अकेली चट्टानें भी
उमकी इच्छा दुलराएँगी ।
जिए, मरे या
गीली चट्टाना मे,
सूने मैदाना मे,
उसके प्राण प्रमत्त रहगे,
पर पर पर जुडते जाएँगे उमके
अपन नयना के
मानाभिमान म ।

हवा में नाचता हुआ बच्चा

(टु ए चार्ल्ड डारिंग इन द विंड)

नाचे जाजो मिधु-तीर पर
तुमको क्या परवाह
तरंगों और हवाएँ गरज रही ह ?
खारी पूँदा से भीगी जलकें लहराजो,
नाचे जाजा ।

तुम छोट हा
अभी नहीं तुमन दना है
विजय मूख की
हार प्रेम की
ज्यो ही बह विजयी हाता हे
कटी फसन गट्टा म बधने का बाकी है
बीर खेतिहर मर जाता है ।

तुमका क्या डर
अगर बबडर दानब-स्वर म चिल्लाता है

यौवन की याद

(ए मेमोरी आग यूथ)

घटियाँ ऐसे बीती जैसे खेल-खेल में,
सीख चुका था जो कि प्रेम में

पड़कर ही सीखा जाता है,

इतनी बुद्धि मुझे थी जितनी

मुन जने से प्रत्याणित थी,

फिर भी इसके वावजूद

जो कहने की मुझमें ताकत थी,

और प्रगसा जिसकी उसने मुझमें की थी,

एक उठा मादल उत्तर की अशुभ दिशा में

और प्रेम का चाद छिपाया उसने सहसा ।

मय मानता मैं अपने प्रत्येक शब्द को

तन मन उमका मराहता था,

और मराहा यहा तलन, मानाभिमान में

एक नई आभा उसके नयना में आई,

लान हो गए गाल चुगी से,

अहकार उस कदर घट गया,

भू पर उमने पाव नहीं मोचे पडत थे ।

फिर भी मेरी मराहना का क्या फन निकला ?

मेर मिर के ऊतर अंधियाला छाया था ।

मूक हुए जड पापाणो से हम बठे थे,
 हमे ज्ञात था,
 यद्यपि उसने एक शब्द भी नहीं कहा था,
 प्रेम, भले ही देवापम हा
 किसी समय मर ही जाता है ।
 इसके पूर्व कि इस विचार का
 नूराघात प्राण ही ले ले,
 नही मुन्नी एक नगण्य चिडी के स्वर पर
 प्रेम बढा, उसने बादल की चादर फाडी,
 अपना प्यारा चाद निकाल किया फिर बाहर ।

वीता वैभव (फालेन मॅजेस्टी)

यद्यपि

भीड़ इकट्ठी हा जाती थी उसका चेहरा

जहाँ दिखाई पड जाता था,

औ' वूढे लागा की आँख

भी खोई-खोई लगती थी,

यही अकेला हाथ आन अकित करता है

वीत गई जो—

उठे जिम्भिया के मेने का

ज्या अतिम दरजारी बाई

गीत गा रहा हो वैभव का वीत गया जो ।

तन की रेखा,

हृदय, मधुरना जिने मिली थी प्रसन्नता में—

ये अब भी हैं,

नेकिन मैं अकित करता हूँ चला गया जो ।

भीड़ इकट्ठी होगी अब भी

और नहीं वह यह जानेगी,

ठीक उठी राहा के ऊपर वह चरती है,

जिन पर कभी चला करती थी

एक चीज, जो जलत बादल-जो जाती थी ।

कि रात आए (दैंट द नाइट कम)

वह रहती थी तूफानों में, जट्टोजहद में,
उमकी आखें बँधी हुई थी उन सपना से
जो उनके है जा कि मौत गर्विली मरत,
इसीलिए उमने मन का वदास्त नही था
साधारण जीवन का सीधा-सादा जड नम,
वह रहती थी उस राजा की तरह कि जिसन
अपनी शादी के दिन इतन तारण चड,
ढोल-नर्सिहे, कान फाडन वाली तापे
लगवा दी थी शार प्रदशन म बट जाएँ
घडिया जल्दी कि रात आए,

कि रात आए,
जल्दी आए !

गुडिया (द डाल्स)

गुडिया गुडिया-कारीगर के घर के अंदर
देस पालना चिल्लाती है,

‘यह तो है अपमान हमारा ।’

लेकिन गुड्डा एक पुराना सत्र गुड्डा से—

बयोकि नहीं था वह बिनी को,

सिफ दिखावे भर को वह था—

जिसने अपनी-सी गुड्डा की कई पीढियों

को देखा था, चिल्लाता है,

बलमारी का पूरा खाना जैसे सिर पर

उठा रहा है,

‘कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हूँ

जो उस घर की कर गिफायत,

लेकिन मालिक और मालकिन—

कितनी बेइच्छनी हमारी—

साल-साल पर

एक बड़ी गद्दी-गुनकदी चीज़

यहाँ लाया करत हूँ ।

एक पालने म डाना है,

और एक बानेभाला है ।’

इम गुट्टे को गार मचाने, हाथ फेंकने

देख मालकिन समझ गई है
उसके पति ने उस खुट्टे गुट्टे की सारी
 वातें सुन ली,
और पकड़ उसकी कुरमी को
उसके काना में है कहती,
शीश झुका उसके कंधो पर,
मेरे प्यारे, मेरे प्यारे,
हाय, हा गई फिर वह गलती ।’

एक जामा

(८ कोट)

एडो से गदन तक लवा
मैंने जामा एक बनाया
मधु-गीतो का,
और पुरानी दत्त कथाएँ
उसपर काढी
सोने चादी के तारा से,
पर न बचा वह वसन
वृद्धि के वजमारा मे,
जिसका तन पर धार फिरे वे
सारी दुनिया को दिखलाते,
माना कारीगरी उही की ।
गौन चाहते व, ले जाएँ,
यह अभियान अधिक साहस का,
नगा होकर कदम बढ़ाए ।

जगली हस

(द वाइल्ड स्वान ऐट कूल)

तरआ के ऊपर है पतवार की मु दरता,
जगल के पथ सूख गए हैं,
अक्तूबर की गोधूली में
शात गान पानी के अन्दर प्रतिबिंबित है,
पथरीले, छिछले तट पर फँसे पानी में
हस एक कम साठ खडे हैं ।

प्रथम गिना जब उनको मैंने
तब से मुचपर से होकर
पतवार एक कम बीस गए हैं
गिनना खत्म न कर पाया था देखा मैंने,
उठे गगन में सहसा वे सब,
और सरसराते डैना को भार-भारकर,
बिसर अधर में, अलग-अलग वे
लवे चक्कर लगे लगाने ।

शानदार उनकी उड़ान मैंने देखी थी
और हृदय जब मेरा भारी ।
तब से सब कुछ बदल गया है
जब मैं पहली बार

इसी पथरीले, छिछले तट पर घूमा था
हल्के पावा से, उनसे हल्के मन से,
और सुनी थी गाधूली में सिर के ऊपर
उनके टना की आवाज़ें,
रजत घटियाँ बजती हो ज्या धीमे धीमे ।

अब भी अथरित, प्रेयसि प्रियतम के जोड़ा-में
वे पथरीले, छिछले तट के ठंडे पानी में
चलते हैं

या उडान भरत अर म,
उनके दिल में भरी जवानी वही पुरानी,
जहा वही भी चाह विचरें,
विजय प्रणय उनके पीछे-पीछे फिरते हैं ।

लेकिन अब वे हसिल, मु दर
थिर पानी में आग बटत ।
किस नाते, किस थील किनारे,
किस मेवार, किस मरसिज वन में
वे तय अपना वास बनाकर,
पहुँचाने होंगे मुय किनको, किन नयना का,
जय में इन पथरीले तट पर फिर आऊँगा,
और नहीं इनका पाऊँगा ?

संगमरमर का मत्स्य-पुरुष

(मेन इम्प्रूव विद इयर्त्त)

सपना ने घिस डाला मुझका,
मौसम ने घिस डाला मुझका,
संगमरमर का मत्स्य-पुरुष मैं
खडा हुआ हूँ जल-धारा मे,
औ' सारे दिन

इस नारी की सु दरता का देखा करता,
मानो वह पुस्तक में चित्रित,
आखें सुख अनुभव करती है,
कान चाहते है सुनना

जो वह रहस्य-स्वर मे कहती है,
बुद्धि रोकती मुझे और आगे बढ़ने से,
अच्छा ही है,

क्याकि उम्र के साथ अबल भी ता बढ़ती है ।
लेकिन फिर भी, लेकिन फिर भी
यह मेरा सपना या सच है ?
काश मिले हम-तुम तब होते
जब यौवन की ज्वाला मुझमे जाग रही थी,
लेकिन अब तो स्वप्न बाटते, उम्र काटते,
संगमरमर का मत्स्य पुष्प मैं
खडा हुआ हूँ जल धारा मे ।

सजीव सौंदर्य (द लिक्विंग च्यूटी)

चू कि तेल-बत्ती अब जलकर खत्म हो चुके
और नसा में रक्त जम चुका

ठंडा होकर,
मैंने अपने असंतुष्ट मन का समझाया,
'मनुआ, अब तो ऐसी शकल दर-देखकर

ही धीरज धर
जा सचि में टली हुई है—किसी धातु की—
या जा गढ़कर गर्द बनाई—मँगमरमर की।

मर-मर कर भी सुन्दरताएँ
बनी प्रेम की-सी छायाएँ

मन की एकाकी घड़िया में चक्कर दती
पर य अपने प्रेमी की नुधि कभी न लेती।

मनुआ, अब हम वृद्ध हो चुके।

जो वित्त सु दरताएँ उनकी जा जवान ह
तप्त अश्रुआ से जो उनका अध्व चटाने
हम तो ठंडे हिम समान हैं।

वृद्ध मन (ए सॉंग)

मैंन साचा था कि जवानी कायम रखने
को डम्बल-मुग्दर काफी है,
ये दुरस्त रक्वगे तन का ।
हाय, किमी ने पहले ही यह क्यों न बताया
मन भी वृद्ध हुआ करता है ?

आज धनी हूँ मैं शब्दो का, लेकिन औरत
शब्दो से मतुष्ट हुई क्व ?
म उसके भादव नयना की मदिरा पीकर
हो सकता बेहाश नहीं अब ।
हाय किमी ने पहले ही यह क्यों न बताया
मन भी वृद्ध हुआ करता है ?

सच कहना हूँ, इच्छाजा की कमी नहीं है
लेकिन मन ही ठडा है अब,
म समना या आग उसी की तन फूँकेगी
उसे चिता पर वर दगे जब ।
क्योंकि बताया था न किसी ने यह पहले से
मन भी वृद्ध हुआ करता है ?

साहित्याचार्यगण (द स्कालर्स)

गजे, भूले हुए गुनाहा को, यौवन के,
बूढ़े, ज्ञानी मानी, औधी खोपडिया के
बठ मपादन करते उन कविताओं का
अथ लगात म्वर-शब्दा की उन लडिया के,
जो कि जवाना ने विस्तर पर तडप-तडप कर
जाडी अपने टूट दिल के बहलान को
या कि किसी अनजान सुन्दरी के काना का
सुस करन का, सुख दन को, सहलान का।

सबके सत्र ह वैठ साथ बदलत आसन,
साँस-ग्यास कर कफ से भरते हैं दावातें,
सत्र कागज पर कलम, दरी पर घुटन घिसते,
और सोचत है जो मयन साची बातें।
सत्र सबकी सिफ जान-गहवान उन्ही से
जिट पडामी उनके जाना-माना करते
पता नही वे सारे के सारे क्या कहते
अगर बँटुला^१ वही निक्कट उनके आ पडत।

^१ ईसा-पूर्व शाक्यगण का सातवा कवि जिसने अपने जीवन के टैगस वगैरे में हा छुमार का बहुत कुछ कुछ नपु बग्या और उन बग्या दा। रोम ने उससे अधिक छुमार और भवन निरंविन कवि को गान नहा दिया। वैद्वनम का कवि। साँ का समेटा अनुबन्ध प्रकाशित हो चुका है।

उसकी प्रशंसा

(हर प्रेज)

जिनकी कीर्ति सुना चाहूँगा
उनमे वह सबसे ऊपर है।
मैं घर मे घूमा हूँ, ऊपर चढा
और नीचे आया हूँ,
उस मनुष्य की तरह कि जिसन
नई किताब प्रकाशित की हो,
या उस युवती के समान जो
नए वस्त्र धारण करती है ।

जन् करता हूँ बात किसी न किमी विधि एसा
करता, उसकी चले प्रशंसा सबसे ऊपर,
फिर भी कोई महिला कहती नई कहानी
पढी कही पर,
कोई सज्जन, अध साए-से, अस्फुट स्वर मे
कोई नाम दूसरा लेते
जो दिमाग मे दौड गया है ।

जिनकी कीर्ति सुना चाहूँगा
उनमे वह सबसे ऊपर है।
नही कसूँगा अब मैं बाते
बडी लडाई की, किताब की,

पगडडी का पक्क चलूंगा
जब तन मिलता नहीं भिव्वारी काई ऐमा
जो रि हवा-पानी मे वचने का कान मे
वैठ गया है,
और कम्पैगा बात उससे

जब तक नाम न उसका आए
दीन-दुखारी अगर हुआ ता

उसका नाम जानता हागा,
उसे यादकर वह खुश हागा
गए दिना म, नौजवान उनका गुण गाते,
बूडे उस पर दाप लगाते थे
पर दीना म, दुखिया म,
नौजवान-बूडे सब उनका गुण गाते थे ।

प्राण-प्रतिज्ञा (ए डीप स्वोर्न वाज)

तुमने प्राण प्रतिज्ञा की थी
पर न निभाई,
इसीलिए तो और-और जीवन में आइ,
फिर भी जब-जब देखो मैंने मृत्यु सामने,
जब जब ऐसी ऊँचाई पर चढा
रुगे य पाव कापन,
जब जब मुझका मस्त कर दिया
भदिरा के दो चार जाम ने,
सहसा शकल तुम्हारी मुझका दी दिखलाई ।
तुमने प्राण प्रतिज्ञा की थी
पर न निभाई,
इसीलिए तो और जीरे जीवन में आई ।

गिलहरी के प्रति
(टु ए स्क्वरेल एट कील ना नो)

गिल्ली रानी आजा, आजा
मुझसे मेलो,
मुझसे प्यार दुआएँ ले ला ।

तुम तो ऐसे भाग रही हो
जसे मेरे पास तमचा,
जा कि चला दूँगा मैं तुम पर,
गलत समझती मेरी मशा ।

बस इतना ही बर सवता हूँ,
यही बरूँगा,
जरा तुम्हारा सिर महलावर
जाने दूँगा ।
गिल्ली रानी, आजा, आजा

मुझसे मेलो,
मुझसे प्यार-दुआएँ ले ला ।

युद्ध सवधी कविता की माँग पर

(अन वीग आरिड फॉर ७ वार पोएम)

माच रहा हूँ मैं यह ज्यादा अच्छा होगा
शायर का मुँह बंद रह ऐसे बचना म
पाम हमारा जादू की वह छड़ी नहीं ह
नताजा का सीधा कर द ।
एमा लिपना क्या काफी सिग्दद नहीं है
जिमन काई मुकुमारी अल्ट्रड यौवन म
मन वहलाए
जिमने बूढा जाटे की ठडी राता मे
गत यावन की याद जगाए ।

गुलाब का पेड़

(द रोज़ ट्री)

वहा कोनोली' स पियस'ने,
'लोग बिना समझे-बूझे बोला करते हैं,
हो सक्ता है यह गुलाब का पेड़ हमारा
सूख गया है ऐसे शब्दों की सासों से

जो ऊपर से शिष्ट-मधुर ह,
या ऐसी उद्दाम हवाओं से सूखा जो
आर-पार विक्षुब्ध समुद्रों के वहती ह ।'

वहा कोनोली ने उत्तर में,
'इसको पानी देने की आवश्यकता है
जिससे इसमें हरी पत्तियाँ फिर से निकलें
औ' प्रत्येक दिशा में उसकी डाल फैलें,
डालों पर कलियाँ मुमकाएँ,
और फलकर मधुवन का सौंदर्य बढ़ाएँ,
गध-नाव में मधुवन अपना दीश उठाए ।'

वहा कोनोली से पियस ने,
'जबकि देश के भारे बूए सूख गए हैं
तब हम वैसे और वहाँ से पानी लाएँ ?
बात साफ है और साफ ही कहनी होगी,
अब हम अपना रक्त बहाएँ,
लान रक्त अपना गुलाब की जड़ में देकर
उमका सीधा खड़ा कर, फिर में हरियाएँ ।

1 = भाषणनै निकासिदा के नाम ।

एक राजनीतिक बदी (आन ए पोलिटिकल प्रिजनर)

जिम लडकी मे छोटेपन से थोडा-सा भी
सब्र नही था,
जब उसमे इतना ज्यादा है भूरी-सी गल '
जरा न डरकर, उसकी छोटी दड-कोठरी
तक उड आई, नीचे उतरी
उसने अपनी नम उँगलिया उसपर फेरी
औ' अपनी उँगली से चारा उसे चुगाया ।

उन लोने पत्तो को छूत याद न उसको
जाई हागी उन बपों की
जब कटुता ने उसके मन का नही छुआ था,
सरस भावनाओ की जगहे
पुष्क विचारा ने न भरी थी,
जन प्रियता पाने को उर मे
वैमनस्य जब नही जगा था,
यानी जब वह राजनीति मे नही फँसी थी,
जहा रान्ता अघे को अघे दिखलाते
पडे हुए गदे नाले मे
उसका गदा पानी पीते ।

१ पुष्क समुद्रा विडिया

हुए बहुत दिन जब मैंने उसको देखा था
वेन वुलवेन¹ के तले सभा मे वह आई थी,
घोड़ी चढकर,

उसके चेहरे पर गावा की सु दरता थी
जिसे वय एकाकी यौवन छेड रहा था ।
इतनी साफ-सुघर लगती थी जैसे चिडिया
जो कि पली हो चट्टाना मे,
तैरी हा सागर-लहरा पर ।

या कि हवा मे पर तोले हा
निकल सिंधु-तट की ऊँची चट्टान पर बने
शुभ्र नौड से
अभ्र विमडित नभ मडल के सर्वेक्षण को,
जब कि प्रभजन-ताडित उसके वक्षस्थल के
नीचे सागर की उत्ताल तरंग उठ-गिर
गरज रही हा ।

¹ आयरलैंड की एक प्रसिद्ध पहाड।

पुनरागमन (द सेकेंड कमिंग)

ऋमश बढ़ती हुई परिधि में
चक्कर देकर ऊपर उठता
बाज नहीं वह सुन सकता है
बाजबाज जो नीचे कहता ,
चीजे टूट-टूट गिरती हैं
केन्द्र संभाल नहीं पाता है,
एक अराजकता जगती पर चढ़ बठी है,
बाध तोड़कर खूनी ज्वार बढ़ा आता है,
और सब जगह भोले भालेपन की दुनिया
डूब गई है ।

आज बड़े विश्वास रिक्त है
और विषम कुठा छोटी में भरी हुई है ।

निश्चय ही इलहाम नया होनेवाला है,
निश्चय ही ईसा का पुनरागमन पास है ।
'पुनरागमन' शब्द क्या मेरे मुँह से निकला
ऊपर को उठ गई यवनिका
पडी हुई युग-युग की स्मृति पर,

और भयकर विस्मयकारी दृश्य एक
आखा के आगे—

किसी बालुकामय मरुथल में
एक शकल नर के सग की, पर नाहर घड की,
फटी-फटी-सी आखा वाली,
जिनम निमम सूरज की-सी भरी रोशनी,
धीमे-धीमे पाव बढ़ाती आगे आती ,
उमवे चारा आर घूमते
रोगिस्तानी शुद्ध पग्दि के परद्याए ।
अधकार का परदा फिर से गिर जाता है ।
वेकिन अब मालूम भुझे है
एक पालन की हरकत न
दा हजार बरमा की लवी जट निद्रा का
दु स्वप्ना से भग त्रिया था ,
और कौन यह अदभुत प्राणी
बाल-चंद्र अपना पूरा कर
जम ग्रहण करन का
वेयलीहम^१ की तरफ बढ़ा जाता है ।

१ वह स्थान जहाँ ईम का जन्म हुआ था ।

चक
(द ह्रील)

जाडे भर हम यही चाहते मधुऋतु आए,
औ' मधुऋतु से ऊव ग्रीष्म की इच्छा करते,
और ग्रीष्म की गम हवाओ से घबराकर
घोपित करते है जाडा सबसे अच्छा है,
जाडा आता तब न हमे कुछ मन को भाता
क्योकि अभी मधुऋतु के आने मे देरी है—
बतला दूँ क्या विचलित करती रहती हमको ?
काया की कामना नीद की, जो न भग हो ।

जवानी और बुढ़ापा (यूथ ऐंड एज)

जव जवान था,
परेदान जव जग करता था,
गुस्ता हाकर चिल्लाता था ।
रुखसत होते मेहमान को
अब यह दुनिया
मीठी-मीठी बातें कहकर
खिसकाती है ।

आदमी—जवान और बूढ़ा

(प्रथम प्रेम)

(० मैं न यग ऐंड ओल्ड—फर्स्ट लव)

पली हुई, गो, सु दर-मनहर नक्षत्रो मे,
जैसे नभ मे तिरता चदा,
निक्ली मेरे बहुत निक्ल से और लजाई
और ठिठक्कर खडी हा गई मेरे पथ मे,
मैंने समया उसके तन मे
रक्त मास का हृदय घडक्ता ।

लेकिन मैंने जब से रक्वा हाथ हृदय पर
औ' पाया पापाण वहा है,
तब से मैंने जिसी काम मे हाथ लगाया
विगड गया है ,
पागल ही उसको छूने को हाथ बढाता
जो अवर म तिरता चदा ।

वह मुसकाई, और फिरी उससे मत मेरी
भौर वन गया मैं आबारा,
कभी यहा पर, कभी वहाँ पर मैं फिरता हूँ
मारा-मारा ।

औ' दिमाग खाली-खाली है,
जैसे तारा भरा गगन भी
जब उसके वाहर हो जाता तिरता चदा ।

आदमी—जवान और बूढ़ा

(मानव गरिमा)

(ए मैंन यग ऐंड ओल्ड—ह्यूमन डिगनिटी)

सहृदय यदि उसका कह सकते,
वह सहृदय है चांद की तरह,
उसके उर में कोई संवेदना नहीं है,
सब के हित वह एक तरह का,
मेरे उर की पीर उसे ऐसे लगती है
जैसे चित्रावली बनी हो किसी भीत पर।

टूट तर के नीचे
छोटे-से पत्थर-सा पड़ा हुआ हूँ मैं कब से,
विजडित जडिमा से।
मेरा दिल हल्का हा जाता,
डाली पर बैठी चिड़िया का
यदि मैं अपनी पीर सुनाता,
लेकिन मैं मुँह बन्द किए मानव गरिमा में।

आदमी—जवान और बूढ़ा

आदमी—जवान और बूढ़ा

(मत्स्यकन्या)

(द मैन् यंग ऐंड ओल्ड—द मरमेड)

एक मत्स्यकन्या ने एक युवक को देखा,
तैर रहा था,
मुख हो गई उसके ऊपर,
आलिंगन में उसको बाँधा
औं हँसकर वे गहरी डुबकी एक लगाई,
औं तब अपनी नीडा की निममता समझी
जब नीचे से लाश उठी ऊपर, उतराई—
प्रेमी का भी दम गहरे में घुट जाता है ।

आदमी—जवान और बूढ़ा

(सानी प्याला)

(द मैंन यग पेंड थ्रोल्ड—द एम्प्टी कप)

वे-पानी मरते पागल को
एक मिला पानी का प्याला,
किंतु कल्पना कर, वद किस्मत,—
एक घूँट यदि और पिया तो पेट फटेगा—
प्याले को मुँह तक ले जाने का दु साहस
नहीं कर सवा ।

पिछने अकटूवर मैंने भी प्याला पाया,
लेकिन वह विल्कुल छँद्या था,
इसीलिए मैं पगलाया हूँ,
झपकी एक न ले पाया हूँ ।

आदमी—जवान और बूढा

(उसके यौवन के साथी)

(द मैंन यग ऐंड ओल्ड—द फ्रेंड्स आव हिज़ यूथ)

बूढा हो जाने के कारण
क्या मेरी आवाज गई है ?
नही, गला मेरा बँठा है हँसते-हँसते ।
जब चदा का पेट फूलता
हँसी नही मेरी रुकती है,
क्योकि गली मे तब आती है मेज'^१
 गोद मे लेकर पत्थर,
पत्थर को कबल से ढक्कर,
औ' लोरी गाती जाती है
लेकिन शांति नही पाती है ।
जो कठोर दिल थी यौवन मे
 पत्थर-जैसी,
और अनुवर जैसे बजर,
अब समझा करती है
 बच्चा है वह पत्थर ।
जौ' पीटर^२ जा धाकड था
 अपने यौवन मे,
रोमानी क्रिस्तो का नायक,

१ स्त्री का नाम

२ पुरुष का नाम

अब पत्थर पर उचक-उचककर वह कहता है,
'मैं ? मैं हूँ मोरो का राजा !'
उन्ह देखकर इतना हँसता, इतना हँसता,
आखा में आसू आ जाते,
आता में बल पड-पड जाता ।
याद मुझे आता कि मेज के
स्वर म प्रम दवा चिल्लाता,
औ' पीटर के स्वर में उसका
उभरा अह पुकार मचाना ।

आदमी—जवान और बूढा

(पतझर और बसत)

(द मैन यग ऐंड ओल्ड—समर ऐंड स्प्रिंग)

एक पुराने काटेदार वृक्ष के नीचे
बठे बठे हम दानो ने रात बिता दी,
बचपन से अल्हडपन तक जो
कही, करी थी सब वह डाली ।
यौवन की बातो तक आते
हमे हुआ आभास कि हम हैं
अलग अलग रह आधे-आधे,
पूरे हाग
एक दूसरे को जो आलिंगन मे बाधें ।
इसी समय पीटर^१ जो आया
हमे देखकर उसकी आँखें लाल हो गईं,
उसी वक्ष के नीचे उसने
पीटर से भी
अपने बचपन-अल्हडपन की बातों की थी ।
बीत गए दिन
जबकि हमारे दिल के अंदर
पतझड के झोंके चलते थे ।
बीत गए दिन
जबकि बसती मस्ती मे वह मुमकाती थी ।

१ किमा युवक का नाम

मृत्यु
(द्वेष)

मरता पशु भय नहीं जानता
और न आशा
मरत मानव की अस्त्रि मे
भय बसता, आशाएँ बसती
गा रि न जाने कितनी बार मरा है
मरकर वह जमा है ।
जा महान है,
स्वाभिमान म,
हत्यारा को दस सामन
उनपर हँसता,
व्यग्य मृत्यु के ऊपर बसता ।
मृत्यु तत्वत क्या है,
इसका है वह ज्ञाना,
वही मृत्यु का है निर्माता ।

रस और रक्त
(आयल एंड ब्लड)

मीलम-कचन की समाधि में
सोए पावन पुष्प नारिया की
काया से
रस रहस्यमय रिसता रहता,
मुरभि सुमन की फैला करती ।

पावा कुचने गार
भारी भारी डटा की कत्रा म
रक्तपायियो की लाग ह, रक्त-सनी जो,
रक्त लगा जिनके हाठा म,
जिनसे टपन रक्त की बूद
उनपर लिपट हुए कफन को
मला करती ।

गिरा दूध
(स्प्लिट मिल्क)

हमे,
जिन्होंने काम किया, उसपर साचा है
साचा, उसपर काम किया है,
दूध की तरह
किसी शिला पर गिर जाना है,
गिरकर फूल, सूख जाना है,
यह जाना है।

उन्नीसवीं सदी और उसके बाद
(द नाइटी थ सेचुरी ऐंड आफ्टर)

ज्वर गु जित करनेवाला
गीत गया,
अब कभी नहीं फिर आनेवाला,
पीछे छूटी प्रतिध्वनियो म
भी जानद नही कुछ कम है
ज्वार गया
भाट की पीछे हटनेवाली
स्वल्प लहरियाँ
तट पर फँसे उपल-दला पर
कन-कल, द्यन उल करती जाती ।

तीन गतियाँ (श्री मृगमेटस)

जेकमपियर की मछली ने
जा दूर किनारे में गहरा सागर मथ डाना ।
ह्मानी कवि की लघु मछली
तट से दूर नहीं जा पाई,
रही जाल के अंदर तिरती
छाटी एव परिधि में फिरती,
और, मछलियाँ जो तट पर, छटपटा रही हैं
व निमकी हैं ?

सशाय
(१)
(वेस्तिलेशन-1)

जन्म निधा के
दो छोरो के बीच
जिंदगी मानव की है ।
सहमा एक ज्वाल आती है,
लपट उठाती एक श्वास, जा
दिवा रात्रि के
अतर को विनष्ट कर देती ।
काया मृत्यु इसे कहती है,
हृदय इसे पश्चात्तापो का अवसर कहता ।
कहना उनका अगर सही है
तो क्या है आनंद
मुझे मालूम नहीं है ।

सशय
(२)
(वेस्मिलेरान-II)

एक वक्ष है
जा घुर पुनगी न नीचे तक
आधा चमक रहा है
कचन की लपटो से,
आधा चमक रहा है
मरवत के पत्ता से
घन कि जिनपर आस टपकती ।
आधे-आध हाकर भी
जपन-अपन म
दाना हिम्से पूरे-पूर ।
आधे म जा झुलस विम्बरता,
आधा उसका डह-डह करता ।
शुद्ध-तप्त ज्वाला-माला औ'
स्निग्ध शान घन पत्रव-दल के
बीच प्रतिष्ठित य दना है
जा समत्व की मूर्ति अनपित,
नल न जान
वह किन सत्या का ज्ञाता है,
प्राण दुरा से पा जाता है ।

साशय
(३)
(नैसिलेशन III)

ग्रीष्म-सूय किरणा से चाह
आसमान में बिरहरे बादल
पत्ता जैसे, चमक रहे हा,
शीत-चंद्र किरणा से चाहे
बन धरती छाया प्रकाश की
जाल बनी हो,
मुझपर है दायित्व भार इतना भारी मैं
उनको देख नहीं पाता हूँ ।

बरसो बीते जा कुछ मैंने कहा, किया था,
नहीं कहा था, नहीं किया था,
पर सोचा था कहीं-कहींगा,
मुझपर बोझ बने बठे है ।
कोई ऐसा दिवस न जाता
जब कुछ ऐसा याद न आता,
जिससे मेरा स्वाभिमान,
जिससे मेरा मन चोट न खाता ।

वाला-गीत
(गर्लस साँग)

नियल अचेली बाहर आई
गोन प्रणय के में गाऊँ,
उलथी मेरी आँखें किसने,
क्या मैं तुमका बतलाऊँ।

मिला दूसरा युवा छड़ी पर
देख उसे मैं मुसकाई,
पर जब उससे की दा बातें
आँखें मेरी भर आईं।

विम्सा बाना, दा कडिया मे
मेरे अनुभव का सचय—
युवक मिना था, वृद्ध-हृदय था,
वृद्ध मिला था युवक-हृदय।

वृद्ध की प्रार्थना (ए प्रेयर फार ओल्ड एज)

ऐसे सूक्ष्म विचारा से, प्रभु, मुझे बचाना
जो दिमाग के अदर ज म लिया करते है,
जो गीतो मे युग-युग तक जिंदा रहते है
वे गायक के उर का रक्त पिया करने हैं ।

हे मेरे प्रभु, मुझे बचाना
उनसे जिनसे वृद्ध बना करता है दाना,
जिनको पाकर वह सबका आदर पाता है,
उस दानाई से वह नादानी अच्छी है
जिसमे मानव गीता को रचता, गाता है ।

यही प्रार्थना अपने प्रभु से करनी मुझको,
भले मरूँ मैं बूढ़ा होकर
मृत्यु मुझे जब लेने आए,
मुझको वह नादान,
भाव मे भीगा, डूबा, गाता पाए ।

जापानी कविता का अनुकरण,
(इमीटेटेड फ्राम द जैपेनीज़)

वात बड़े अचरज की है यह—
सत्तर साल रहा जीता मैं,

(जय, वसंत के फूला की जय
फिर बसंत वन में आया है।)

सत्तर साल रहा जीता मैं—
माधारण खाता-पीता मैं—
बचपन बीता, गईं जवानी,
इसके बाद बुढापा आया,
खुश हावर के,
बितु कभी मैं नाच न पाया।

तो क्या ?

(हाट देन)

जब वह पढता था तब उसके सहपाठी गण कहते थे,
मित्र, करो कुछ ऐसा जिसमे आगे चलकर पाओ नाम,
उसने भी ऐसा ही साचा और नियम-मयम साधा,
और जवानी के वर्षों को कर डाला आराम हराम।

काई प्रेत पुरातन बोला,
ऐसा कर डाला तो क्या ?—

उसने जो कुछ लिखा, पढा उसको दुनिया के लोगो ने,
उसकी इतनी बिकी बिताव, उसने इतना धन जोडा,
जा चाहा वह खाया, पहना, और गिलाया मित्रा को,
मीत बना जो उसका, उसने साथ न फिर उसका छाडा।

काई प्रेत पुरातन बोला,
ऐसा कर डाला तो क्या ?—

उसने जो सुख सपने देखे थे वे सारे सत्य हुए—
बीबी, बेटी, बेटा, रहने को सुदर छोटा-सा घर,
खुली जगह जिसम गोभी का फूल, टमाटर उगता हा,
कवि, लेखक, साहित्यिक आएँ उससे मिलने को सादर।

काई प्रेत पुरातन बोला,
ऐसा कर डाला तो क्या ?—

बृद्ध हुआ तो उसने मोचा, मेरा काम समाप्त हुआ,
मैंने बचपन की आशाआ को जीवन में रूप दिया,
मूख मुझे कोमें जी भग्कर, मैंने कब्र हिम्मत हारी,
एक चीज में हाथ लगाया था, उमरों परिपूर्ण किया ।

कोई प्रेत पुरातन बोला,
आर जोर में,
ऐसा कर डाला तो क्या ?—

महान पर्व

(द घेट डे)

इन्कलाव की जय हो, जय हो !
और बडी तापो को दागो—
एक भिखारी घोडे पर चढ
पदल एक भिखारी पर कोडा सटकाता ।

इन्कलाव की विजय हो गई,
और बडी तोपे दगती हैं,
भिखारियो ने
जापस मे जगह बदली है,
लेकिन कोडा उसी तरह से चलता जाता ।

पारनेल'
(पारनेल)

पारनेल का
पथ पर आते देख
लगाया मजदूरा ने
जय का नारा !

पारनेल धीमे से बोले,
आयरलैंड स्वतंत्र बनेगा,
लेकिन तब भी तुम ढोओगे
ईटा-नारा !

१ आयरलैंड का स्वतंत्र संघ का एक नेता ।

जो हार गया (हॉट वाज़ लास्ट)

जो कुछ हार गया मैं
उसके गीत सुनाता
लेकिन जो कुछ जीत गया
उससे डरता हूँ ।
लड़ी लड़ाई जसे फिर से लड़ी जा रही,
मैं उसमे शामिल होता हूँ,
हार गया जो राजा वह मेरा राजा है,
हारे सैनिक मेरे सैनिक,
बदम बढ़ाते रह
सुबह से शाम तक वे
या संध्या से अरणोदय तक,
पाव पीटते रहते हैं वे
सदा एक ही छ्वाटे से पत्थर के ऊपर ।

प्रेरक
(दृश्य)

तुम इसको वीभत्स समझते हो
जो मुझका आघ, वासना
घर रहती
बद्धावस्था आने पर भी ।
जत्र जवान था
ये दाना ही
इतन भारी रोग नहीं थे
जिनमे पीड़ित आह भर्रं मैं ।
शोच, वासना छोड
बचा है क्या अब मुझम
जिनम प्रेरित गान कर्रं मैं ?

राजकवि को उलाहना (ए माडेल फार द लारिएट)

उदयाचल से अस्ताचल तक के तख्ता पर
तरह-तरह के राजाजा ने राज किया है,
बड़ा किसी को, भला त्रिमी को घोषित करके
तरह-तरह की रैयत ने सम्मान दिया है।

इसपर अचरज करन की कुछ नहीं जरूरत,
यदि ऐसा ने राज्य मान मर्यादा के हित
बड़ा प्रतीक्षा में रक्खा अपने प्रेमी को।
खड़ा प्रतीक्षा में—।

कोई फूला था फकीर से राजा बनकर,
काई काले-गारे गुंडा का राजा था,
और टुकूमत करता था इसलिए कि उसकी
तलवारा न झुका दिया था सबका माथा,
औं पीता था सबत या शराब मनमानी
क्योंकि खिलाफ नहीं कोई कुछ कह सकता था

खड़ा प्रतीक्षा में रखता था निज प्रेमी का।
खड़ा प्रतीक्षा में—।

गिरा साधती मौन, आधुनिक सिंहासन के
चाटुकार जब उसकी जय-जयकार मनाते।
तारीफें, जो बेची और खरीदी जाती,
दफ्तर, जिनका कुछ थाड़े से मुख चलाते,

सरकारी मुहरें, या दस्तावेज, दस्तखत—
क्या ह, जिनके लिए कि काई भला आदमी
खड़ा प्रतीक्षा में रखे अपने प्रेमी को।
खड़ा प्रतीक्षा में—।

पुराने पत्थर का सलीब (द थ्रोल्ड स्टोन कास)

'नता भोना भाला हाता,
झूठ यत्रवत वाला करता,
पत्रकार झूठा का रचता
और तुम्हारा गला पकड़ता,
वाट पडासी दन जात,
तुम घर बठा मौज उडात ।

कहा पुरान पत्थर के सलीब के नीचे
सड़े चमकते कवच पहननवाले न ।

यह युग, जानवाला युग भी
झूठ, दगा, धाखेजाजी का
भले-बुरे म भेद बताए,
किमका है मालूम तरीका ?
नीचा के ह ऊँचे बान,
क्या ह कौन, नौन पहचान ।'

कहा पुरान पत्थर के सलीब के नीचे
सड़े चमकते कवच पहनन वाल न ।

जमिनता बंसुरे हुए हैं,
देख मुझे गुस्मा आता है ।
बहते, उत्तम बह अभिनता
बूद-उदय जा गुगना है ।

यह उनका मानूम नहा है,
वाई दूय महान गान पर गान टुजा ता
मिनता मा का नहाना है ।'

कहा पुरान पत्थर के सलीब के नीचे
सड़े चमकते कवच पहननवाले न ।

वे प्रतिमाएँ

(दोज़ इमेजज़)

मुनते हो मैं क्या कहता हूँ,
अपनी मनागुहा से निकला ?
मुक्त भाव स मुक्त हवा मे,
मुन्न सूय किरणा मे विचरा ।

मैं तुमसे यह क्व कहता हूँ
रोम और मास्का सिधारा,
इस चक्कर को छोडो, यारो,
और कला पर तन मनवारो ।

जाओ, प्रतिमाआ को साजो,
जिनम भेद भरा है भारी
वन के चारा कोनो पर जा—
कुलटा, वालक, बाध, कुमारी ।

और गरट जा उडता नभ मे
पर फैलाए, उसको जाना,
गाओ फिर जितना जी चाहे
जा उन पाओ को पहचानो ।

वृद्ध न क्यो हो जाएँ पागल ? (हाई शुड नाट थ्रोल्ड मेन बी मैड)

ऐसा पाकर वृद्ध न क्या हा जाएँ पागल ?

मु दर, स्वस्थ, जवान जिम जग न देखा कल
जिसकी थी मजबूत कलाई, स्वच्छ बतीसी,
आज गराबी है, करता अक्कार-नवीसी।
वह लडकी जा कभी दात¹ पर थी मरती,
आज किमी ग्लूसट से बच्चे पैदा करती।
नारिकभी ये जिमे कला के सपने प्यारे
चढ गाडी पर आज लगाती फिरती नारे।
बुद्ध कहते है इसका किस्मत मे नाता है
भूखा मरता भना, बुरा हलुआ खाता है।
बुद्ध, केवल इसलिए कि उनने मित्र-मडामी
बुद्ध हैं, जमे परदे पर हा तस्वीरें,
करते हैं इन्कार देखने से उनना जा
प्रसर बुद्धि के, और जिन्हाने एक बार उठ
उन्नति की ही आर प्रगति की घोर घोर।
युवक देखते नही कभी ऐसी बाना को,
पर बद्धा की आग तने यह मय आता है,
और पुगन ग्रथा मे भी मिन पाता ह
नही तसन्नी बनवाना जय याई हल,
यतनाआ तम, बद्ध न क्या हा जाएँ पागल ?

१ (१२६४-१२२०)

॥ महाकवि द मिश्रन कविता का रचयिता ॥

बद्ध न क्या हा जाएँ पागल ?

राजनीति (पालिटिक्स)

‘हमारे युग में मानवता के भाग्य का रहस्य राजनीति के क्षेत्र में खुलता है।

—थामस मन

किस में, जब वह सुकुमारी खड़ी सामने,
वह सुन सकता,
जो कहते हैं रोम-रूस के अमरीका के
नीति प्रवक्ता ?
दुनिया घूमा हुआ व्यक्ति यह जो कहता है
आखा दसी,
और उधर वे राजनीति के पण्डित कहते
कागद-लेखी ।
हो सच, सब यह बात युद्ध की और युद्ध की
आह-वराहे
काश युवा हो सकता फिर मैं, आर्लिंगन में
भरती उसका
मेरी वाह !

‘छाया’ से कुछ पक्तियाँ
(लाइस फ्राम द अपेक्शिन)

जब मनुष्य बूढ़ा होता है
तब दिनानुदिन
उमका उर-आनद मरोवर
अधिवाधिय गहरा हाता है
और अत मे
उमका अतर
जा पहले छूँछा था
पूरा भर जाता है।
वाहर जजर,
पर भीतर के पूरे बन की
उसको आवश्यकता हाती
क्याकि रात धिरती जाती है—
रान रहस्या का उद्घाटन कर जा
मन का डरपानी ह।



विलियम वटलर ईट्स एक परिचय

'कास्ट ए कोल्ड आई

थान लाइफ, थान डेप,

हासमन, पास आई !'

(उदासोन, बस, एक नजर

जीवन पर डालो, और मरण पर,

असवारोही, निकल यहाँ से जाओ सत्वर !)

आज मुझे अब मैं बारह बरा पटल की वह गाम याद आती है जब विलियम वटलर ईट्स पर अपन साध के सम्बन्ध में दो मास तक आयरलैंड की यात्रा करने के पश्चात् मैं ड्रमक्लिफ आकर उनकी समाधि के सामने खड़ा हुआ था।

ईट्स की इच्छा के अनुसार जिम उन्होंने अपनी एक कविता में व्यक्त किया था, मैंने खुलबखुल की छाना में उनकी समाधि है, बहुत ही सदा चकचाह की अब समाधिया जसी, पाम है एक छोटा-सा गिरजाघर है। विशिष्टता है ता गिरजाघर की तरफ लग परपर में जिमवर उपयुक्त पवित्रता गुदी हुई हैं। ईट्स ने अपनी मृत्यु में कुछ मास पूर्व, अपने एपिटोफ के लिए ये पवित्रता लिखी थी।

और इन पवित्रता का पत्न हुए मरा ध्यान चला गया उपनिषद् के 'तेन त्मन्तन भुञ्जीया पर, क्वार क पद 'ज्या की त्या धर दीनी चदरिया' पर और पन का पवित्र पर 'अनुरक्त न हा जीवन पर—यह वहाँ ता है। प्रया की यह उपनिषि ईट्स का बड़े ही धर्म, स्वाध्याय, अनुभूति अम्मास और सधप के बाद हुई थी। उन्होंने किर क रूप में गुणगुनाना शुरू किया था और अंत में चतुर्वर ब गया क स्वर में वाचन लग थ। कम्पिज किरकविद्यालय क मरे दोष निरीक्षण, १० टी० आर० हल ईट्स के अन्तिम दिना में उनस मिल थ। ईट्स ने उनस पूछा, मंगे कविता का मरने बड़ा गुण तुम क्या समझते हा? हा० हल बान—प्रज्ञा (दिबडम)। प्रज्ञा में उनका सातपथ या विचार और भावनाओं क स्थायी मूल्य म, जावन क ह्य विधान, प्रेम पूजा आदि दुन्हा का साटन, निर्भयता और मानव की पौरपूण गरिमा में स्वाकार कम्ने स और अतन उन निरपताता, मयम,

संतुलन और गाम्भीर्य से, जो जीवन के भावना का नहीं, जीवन के द्रष्टा का प्राप्त होता है। ईटस की कविता के इन्हीं गुणों ने उसे ऐसी सावभौमता प्रदान की है कि संसार में सब जगह जहाँ भाषा का व्यवधान नहीं है, उसके प्रेमी और प्रशंसक हैं।

ईटस को अपने लंबे साहित्यिक जीवन में प्रख्यात समालोचकों की बटु आलोचनाओं का भी शिकार होना पड़ा था। समय-समय पर उन्हें पलायनवादी, अस्वस्थ सौंदर्यवादी, सीमित भावनाओं का विशेषकर असफल प्रेम का कवि, रूमानी काव्य परम्परा का अंतिम उच्छिष्ट, अस्पष्ट प्रतीकवादी, और अंत में व्यक्तिपरक रूपों का क्लिष्ट, दुर्बोध और असंगत कवि कहा गया था। उनके परवर्ती काव्य में अश्लीलता के दोष भी दखे गए थे। उनके अपने ही देश अपने ही नगर की रुढ़िग्रस्त जनता ने उनके मुख्य विचारों का विरोध किया था और एक बार तो उनके एक नाटक के प्रयोग के विरुद्ध धरना तक किया गया था। लेकिन ईटस निरंतर गतिशील और विकसित हुए रहें। या तो किसी भी दर्जे पर उनका स्वर ऐसा नहीं था कि उसकी उपेक्षा की जा सके, परंतु अपने जीवन के पिछले दस वर्षों में उनके शब्दों में जो गहराई जो व्यापकता, जो जादुई शक्ति आ गई थी वह अद्वितीय नहीं तो दुर्लभ अवश्य नहीं जा सकती है। इसमें सन्देह नहीं कि ईटस अवदम्त शिल्पी साधक थे। लाग उन्हें अक्सर विशुद्ध कविता का उपासक कह देते हैं। मैं समझता हूँ यह केवल अंध सत्य है। परिधान का आधा सौंदर्य परिधान धारण करनेवाले में निहित होता है। ईटस को यह अनुभूति शायद बहुत पहले ही हो गई थी कि जीवन की सच्चाइयों से और मिथ्या शक्तियों में ही अपना का प्रकट करती है। वास्तव में ईटस की साधना दुर्लभ थी और दोनों में उन्हें अदभुत सफलता प्राप्त हुई थी। जहाँ भी जीवन और कला की कसौटी साथ रखी जाएगी वहाँ ईटस का काव्य-रचन अपने खरेपन का सबूत देगा। उनके पास मानवता का एक स्वस्थ और सुदृढ़ मानदंड है। उनकी अनुभूतियाँ सख्त और गहरी हैं। उनकी अभिव्यक्तियाँ कला सयत और सुगठित हैं।

ईटस अपने जीवन के अंतिम वर्षों में अंग्रेजी भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते सगे थे। उन्हें १९२३ में नाबेल पुरस्कार भी मिला था। टी० एस० इलिफट ने उनके मरने के उपरान्त उन्हें युग का सबसे बड़ा प्रतिनिधि कवि कहा था। मृत्यु के पश्चात् पिछले पच्चीस वर्षों में ईटस के कवि का नाम निरंतर बढ़ता गया है। अंग्रेजी के विख्यात समालोचकों में शायद ही कोई ऐसा हो जिसने ईटस के काव्य के किसी पक्ष पर प्रकाश न डाला हो। साथ ही ईटस को लोकप्रियता भी कम नहीं मिली। विशेषज्ञों का आदर और जनसाधारण का प्रेम उन्हें एक साथ मिला है।

ईटस का जन्म १८६५ में डबलिन में, एक मध्यवर्ती परिवार में हुआ था। उनके पिता प्रिंसेपल स्कूल के चित्रकार थे और प्रिंसेपल कविता के प्रेमी। ईसाई धर्म की रुढ़ियों से वे सबंधा मुक्त थे। अपने लड़कपन में उन्हीं की

प्रेरणा में ईदम न स्पेंसर, ब्लैक, गेली और रासेटी की कविताओं का अध्ययन किया और इन कवियों का समानी रंग, ध्वनि कल्पना में ख डव गए। इंग्लंड में स्कूला में अपनी प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करने के बाद उन्होंने डवलिन में विधिवत चित्रकला का शिक्षा ता। विशेष सफलता प्राप्त हुई नहीं मिली और किसी अत प्रेरणा से उन्होंने कवि के रूप में अपने का स्थापित करने का निश्चय किया। उनके कवि में चित्रकार प्रच्युत है।

उन शिक्षा इंग्लंड में, अतीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में पटर और वाइल्ड की 'कला के लिए कला' के सिद्धान्त का बोलबाला था। माबरस से अधिक पुराना समानी कविता 'नेक और बत से स आरभ करके रामटी, स्विनबन और मारिस तक अपना सारा धर्म विलेज चुकी थी फिर भी वह कुछ छोटे कविया, जमे लियोनेल जानसन, डाउमन, डेविडसन, के द्वारा कुछ हृनिमता कुछ अतिशयता का आशय लेकर अपने का जस-तस जीवित रखने का प्रयत्न कर रहे थी। इनका बाद की डिक्टेड अथवा ह्यासमुरी कवियों की सना दी गई। नदन में उनका एक कव भी था जिसे राइमस कव कहते थे और ईदम न अपने कवि जीवन के प्रारम्भ में अपने को इन्हीं कवियों के बीच में पाया। ये कवि अपने विविध धर्म, वेग भूया रहने-सहने अव्यवस्थित जीवन से अपने को समाज में अलग रखने और समाज के लिए आशय कवने का प्रयत्न किया करते थे। यत् ता नहीं कहा जा सकता कि ईदम उनके प्रभाव में विन्कुल अछते रहे परन्तु गीघ्र ही उनका यह अनुभूति हो गई कि उनका स्थान उनके बीच नहीं है या यदि है भी ता उम एक विविष्टता लेकर होना चाहिए। वे आयरलड के हैं, बन्ट रम के हैं और उह अपने कन्ट्रि ध्वनित्व को अलग रखना चाहिए और अपनी रचना में उनकी छाप छाडनी चाहिए। ईदम की प्रारम्भिक रचनाओं में भी उनका कल्ट स्पष्ट बालता है। उत्तरोत्तर वे अपने दग रस के साथ अधिकाधिक एकात्म होते गए।

अपनी इस धारणा के लिए ईदम का बल मिला था आयरलड के पुनर्जागरण में। आयरलड ७०० वर्षों की अघेजा की गुलामी में मुक्त होने के लिए जम अन्तिम प्रयत्न करने की तयारी में था। डवलिन आन्ति नगरा में राजनीतिक हलचल के साथ हा बहू-गी मास्त्रिक और साहित्यिक हलचलें हा रही थी। आयरलड अपनी मूल कविता का पहचान, कला और मास्त्रिक में उम अनिश्चय कर यारापीप मनम पर प्री इत्त करना चाहता था। नई प्रतिभाओं उमर रही थी। इनमें में आग धनकर जाज मूर, लेडी थियोरी, मिज, जाज रगन (ए० इ०) बहू-विस्माल हुए। ईदम ता उम पुनर्जागरण के केन्द्र ही बन गए। उन्हीं आयरलड के एक राष्ट्रीय रगमय किया एकी विपदर के रूप में। पर यह उमभना चलन हागा कि एकी विपदर राष्ट्रीय आदानन के प्रचार का माध्यम था। सच्चाई ता यह है कि ईदम का कलात्मक, मुहचिपुन मन राजनीति की मदगी और हा-रुन्ने स बहू-धरना

था। उनके दशवासिमा ने एक समय उनके देश प्रेम पर सदह किया था। राष्ट्रीय नेताओं को ओर से ही कई बार उनके थियेटर का विरोध हुआ था। परंतु इटम कभा भी यह सहा नहीं कर सकत थे कि राजनीति की सकीणता कला, माहिय, रगमच पर हावी हो। ईटम के इस उदार दण्णिकीण का प्रभाव समस्त समकालीन आधरी साहित्य पर व्यापक रूप से पडा।

यहा एक बात समझ लना बहुत जरूरी है। ईटस को किसी आदोलन अथवा प्रगति का प्रवक्ता अथवा माउयपीस मात्र समझकर हम उनके प्रति न्याय नहीं कर सकत। ईटम का अपना अलग व्यक्तित्व है और वे उसकी सत्ता और स्वतन्त्रता के प्रति सचेत हैं। वे भाड में लाना सकत थे और न खो जाना चाहते ही थे। अतिशय व्यक्तित्व और अभिजात्य अभिमान का आरोप भी उनपर लगाया गया था। एकदम निजी अनुभूतिया का अभिव्यक्ति के स्तर पर कला की साव्य जनीनता देने की क्षमता आज उनका विशिष्टता मानी जाती है। उदाहरण के लिए हम उनकी प्रेमानुभूतिया को ले सकते हैं। अपने यौवन में वे आयरलंड के राष्ट्रीय आदोलन की एक प्रसिद्ध कायकर्त्री और अनिद्ध सुदरी भाड गान के प्रेम में पड गए थे। यह प्रेम सफल नहीं हो सका और ईटस अपनी पचास वय की अवस्था तक उस यदना को भेलते रह। ईटस के आधे काय पर भाड गान की छाया किमी तक किमी रूप में पडी है लेकिन अपने इसी काव्य में उन्होंने रुमानियत की परंपरा में जा कुछ स्वस्थ गरिमाय ऊर्ध्वमुखी है, उसे बचा लिया है। कलापक्ष में आयरलंड की दतकथा का लोक विश्वास लोक गीता, लोक लय सहजा का आश्रय लेकर उहान रुमानी काय के बसत घुटत वातावरण को जैसे एक ताजी हवा से जादोलित कर लिया है। स्त्री अथ में उह अतिम रुमानी कवि मानना ठीक होगा। उही के वन पर जप्रेजी काय परंपरा में रुमानियत का प्रदीप जैसे बुभने से पहले अपनी प्रतर प्रभा से प्रदीप्त हो उठा है। लेकिन अपनी काव्य-मात्रा में वे इन रुमानियत को छाडकर बहुत आगे भी निकल गए थे।

ईटस महत्वाकांक्षी कवि थे देशाभिमात्री होते हुए भी वे केवल आयरलंड के कवि वाकर रह जाना नहीं चाहत थे। उनके सामने इटली के प्रख्यात कवि दात का उदाहरण था जिहे पूर योरोप के परिवेश में महान कवि माना गया है। इटस ने एक बार मारोपियन गीता लिखन की बात भी सोची थी किंतु वे जानते थे कि बडी (ग्रेट) अथवा थण्ड कविता बड युग में ही लिनी जाती है, जब युग किसी दृढ विश्वास अथवा आस्था से सुमबद्ध हो। दाते की 'डिवाइन कॉमिडी' के पीछे कथलिक धर्म था और ईटम के युग में ईसाण धर्म की रही-सही आस्था को भी डार्विन स्कूल, टिडेल के वनामिक विचारों ने उहा दिया था। विश्वास के कुछ आधारों की आवश्यकता उन्हें अपने यौवन में भी महसूस हुई थी। आग चलकर उनकी यह धारणा दृढ होती गई कि जब तक योरोप की आस्था किमी सिस्टम, दशन सिद्धांत

अथवा धर्म में आनन्द नहीं होती तब तक न उच्च कोटि का काय संभव है और न उच्च कोटि का जीवन ।

और इस हा मिस्टम की राज अथवा स्थापना में उद्धान नहीं रहती की खाक नहीं छानी । आयरी किमाना का अधविश्वाम, मिस्मरजम, मिएम, जादू-टाना प्राचीन यूनान और मिम के विचारक, मध्ययुगीन पारोपीय कामियागर, यद्ददिया का काला भारतीय तन्त्र, गीता उपनिषद् जमनी का ईसाई रस्यवादी जैकब बहमन, स्वीडनबोग, मेडेम ट्रावावाडमकी की विद्योगोफी, रानीशूगम आदि—क्या क्या उनका कौतूहल, गाय और अध्ययन का विषय नहीं रहे । इतना कि इसी पक्ष की देवदर पारचात्य नमानोचक अपना मिर धुनने लगता है । इतना की यह सब क्या मूमना थी ! और मरी यह धारणा है कि इतम की श्रेष्ठ कविता का श्रुत बड़ा आग ही गाय का कारण संभव हो सका । ईतम न स्वयं इसे स्वीकार किया था । इनका प्रभाव तो निश्चित ही उनका काव्य पर है । प्रमगया म्बता दू कि इसी का भी कश्चित्त में अपन रिमच का विषय बनाया था—इतमू० बी० ईतम ऐंड जोरल्लियम । कविता प्राय कवि का साधा पकड़ नहीं होती बुद्ध अवविता का आर हाथ बझान दूण गायद यह महर ही उक्त आलिगन में आ जाती है । ईतम गोनन रहे दान और प्राण्ट हांती रती उक्त कविता ।

इतम का मन गाय का सबन बड़ी उपलब्धि थी, कविता की दृष्टि में प्रनाका का समनशरी, उनपर अधिकार और नमनये प्रतीका का निर्मित करन की शक्ति । पाराप का समूचा आरल्ट माहित्य—इन तांत्रिक न कहना चाहूंगा, कनादि उमका एक श्रुत अर्थ ही गया है—चित्रा, रूपका और प्रतीका की गुह्य भाषा में है । आधुनिक समय में इतम प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ के गायद सबन बड़े और मूमन बनाकार हैं । प्रतीका का धुनन, उक्त माहित्य बना और मस्कनि की परपरा में जाडन, उनमें अर्थों का गहराई भरन और उक्त नय नय मन्त्रों में मयुक्त करन में इतम न जा काय बना की समनशा प्रशान्त की है वह आन विज्ञाना का अनुमधान का विषय है । मनक गाय ही उनका परवर्ती काव्य की अलकागहोनता बोद्धकता, बहिर्भुगता, यथाप्रियता और इनका द्वारा दगावान का प्रति अपनी प्रतिप्रियाका का नि गरीब, निर्भीक, तथा यशस्त म्यराप्राना स व्यक्त करन की क्षमता न उनकी वाणा का वह आज शिवा है जो किमी नरी का हो पवता है और जिाकी ओर मीन शारन में ही मकर किया है । अर्थ न जाननशाव नी बनल प्रति म्, मरा एका मयान है, मन कतिपा में उक्त आज का जामा का मक्के ।

ऐड आई दिवरयर माई प्रेय
 आई माव प्लोटाइनसड पाठ
 ऐड आई इन प्लेटोड टोथ,
 रेथ ऐड साइड थयर नाट

दिल मन मेड अप द होल
 मेड लाक, स्टाफ एंड बरेल
 आउट आफ हिज बिटर सोल,
 ए, सन एंड मून एंड स्टार, छाल। (टावर)

पूछा जा सकता है कि उनके सिस्टम का क्या हुआ ? अपनी मृत्यु के लगभग दशभर पूर्व उन्होंने उसे पूरा करके 'ए विजन' के रूप में दिया। इसका प्रशंसा करनेवाले और इसका मजाक उड़ानवाले दोनों हैं। जॉर्ज रसल ने कहा था कि इसके एक एक पृष्ठ पर एक एक ग्रथ लिखा जा सकता है। टी० एम० इलियट ने इस 'लोअर माइथालोजी' कहा था—निम्नकालिका का दगनाभास। ईट्स ने उसका प्रकाशन के समय स्वयं कहा था कि 'मैं एक नये जहन्नाम की उद्घोषणा करता हूँ।' दुनिया ने उसे इस रूप में नहीं स्वीकार किया। पर ईट्स के व्यक्तित्व और उनके काव्य को समझने में इसकी महत्ता अधिकाधिक स्वीकार की जान लगी है।

ईट्स के संबंध में कोई लेख, जो विशेषकर भारतीयों के लिए लिखा गया हो तब तक अपूर्ण ही रहेगा तब तक उसमें उनके भारत-सम्बन्ध की चर्चा नहीं। अपने जीवन काल में वे थियामोफिक्ल सोसाइटी के एक प्रमुख सदस्य मोहिनी चटर्जी के संपर्क में आए, प्रौढावस्था में रवीन्द्रनाथ ठाकुर के और अपनी बद्धावस्था में पुराहित स्वामी के संपर्क में आए। पुस्तकालय के द्वारा भी भारतीय दगन और काव्य से उनका धनिष्ठ परिचय था। मोहिनी चटर्जी अद्वैतवादी थे और उनके जगन्मिथ्या के उपदेश का ईट्स पर गहरा प्रभाव पड़ा। युगत्याप्त यथायता के विरुद्ध उनके मन में स्वप्निलता की जो प्रतिधिया उस समय हो रही थी उस इस सिद्धांत से कुछ बल मिला होगा। उनकी बहुत सी प्रारंभिक रचनाएँ पर मोहिनी चटर्जी के भारतीय विचारा की छाया है। मोहिनी चटर्जी पर भी उन्होंने एकाधिक कविताएँ लिखी—एक तो उनसे मिलने के चात्तीस वर्ष बाद—कविता का 'तीपक' ही है—मोहिनी चटर्जी।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर से उनका परिचय गीताजलि के माध्यम से हुआ। उन्होंने उसके अनुवाद की पंक्ति-पंक्ति सुधारी थी। कुछ लोगों का ऐसा खयाल है कि यदि ईट्स ने अनुवाद को इतना सुन्दर और सुगठित न बना दिया होता तो शायद ही नाबेल प्राइज कमेंट्री का ध्यान 'गीताजलि' की ओर जाता। ईट्स ने उसकी भूमिका भी लिखी थी। इंग्लैंड जाने पर गुरुद्वय उनसे मिले थे। उनके 'पोस्ट आफिस' नाटक की भूमिका भी ईट्स ने लिखी थी। और एक बार उसका अभिनय अपने एबी थियेटर में कराया था। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का प्रभाव विशेष उनपर नहीं पड़ा। ईट्स को प्रायः रवीन्द्र सा ही रहस्यवादी समझ लिया जाता है। यह बिल्कुल भ्रामक है। ईट्स में वह समर्पण की भावना नहीं, जो रवीन्द्र बाबू का मूल स्वर है। ईट्स का मूल स्वर है सधप—यह जानते हुए भी सधप, कि अंत में मनुष्य को

पराजित हो जाना है—पानी ट्रेजिडी की सोल्नाम स्वीडनि ।

पुराहित स्वामी १९३० के लगभग इंग्लैंड पहुँचे थे और ईटस वं जीवन पमत उनक मित्र बन रह । ईटस ने उनकी तीन पुस्तका की भूमिकाएँ लिखी । उनक माघ मिलकर दस उपनिषदा का अंग्रेजी म अनुवाद किया । पुरोहित स्वामी न गीता' जनूदित कर ईटस को समर्पित की । 'ए विजन' व कुछ विचार निष्चय ही पुराहित स्वामी से मिले हैं । जपन अंतिम नाटक के लिए ईटस ने स्वयं लिखा था कि वह "क्या रूप म पुराहित स्वामी की फिरोमाफी है । इटस अपने अदर दार्शनिक और कवि का मधम बहुत पहले से अनुभव करत थ । पुराहित स्वामी व सपक म यह सधम और बढ़ा, पर अंत म इटस के कवि की ही विजय हुई, तकिन कवि ऐसा जिमम दार्शनिक की मी निरपक्षता आ गई हो ।

ईटस के कवि का निर्माण जिन तत्वा स हुआ था और उसका विकास जिस जिस क्रम स हुआ उसका अध्ययन बड़ा ही मनोरंजक और रोचक है । ईटस, इसमे सपेह नहा जन्मजात और अभूत प्रतिभा के कवि थे । अनुभव और अध्ययन म आए हुए मिलने ही अलग अलग और परस्पर विरोधी को काव्य का सामंजस्य प्रदान करन की उनम विचित्र क्षमता थी । हम इस बात का थोड़ा हृष और जनिमान हाना स्वाभाविक है कि इतने बड़े कवि के निर्माण म भारत और उसक दत्तन-काव्य न भी कुछ योगदान दिया था ।

ईटस की मृत्यु द्वितीय महायुद्ध स कुछ पूर्व हो गई थी । उह इसका आशाम हा गया था कि दुनिया किसी सहार की ओर जा रही है, तकिन यदि सहार ही नियति है तो उसक । ओर कायर की तरह नहा बीर की तरह जाना चाहिए पुन निर्माण का सक्षम लवर जाना चाहिए, यही उनका मूल सदेश था ।

भाल मिस फ्राल ऐंड धार विन्ड धगेन

ऐंड दोव दः विन्ड देम धगेन धार म ।—

गेदटी ट्रांसनिर्माण धाल बट ड्रेड ।

(सभी वस्तुएँ ध्वस्त हुआ करती हैं फिर निर्मित की जातीं

धौर उहें जो फिर से निर्मित करत हैं हर्षित होने हैं ।—

हय ध्यस की विभीषिका की सृजन-स्वप्न म परिणत करता)

प्रश्न परिचर्चा (पत्रकार-दिनकर नामसलकर)

प्रश्न—ईटस की कविताओं के अनुवाद की योजना कब धनी ? आपने ईटस का चुनाव महज अपने शोधकार्य के कारण किया अथवा उनकी काव्यात्मक विशेषताओं के आधार पर ?

उत्तर—पहला बार ईटस की कविताओं का अनुवाद मैंने १९५६ में किया। पत्रजी ने रटिया क उद-मध-कायत्रम के अनगत पाँच छंद कविताओं का अनुवाद मुझमें कराया था जो बाद को प्रसारित हुए। इससे पूर्व, मुझे तो नहीं मालूम कि ईटस की कविताओं का कोई अनुवाद किसी ने किया है। मैं हिन्दी की ही बात कर रहा हूँ। भारत की अन्य भाषाओं में उनकी कविताओं के अनुवादों में सबसे पहले हुए हैं। मैं नहीं जानता। कुछ अनुवाद मैंने बाद का किया—गायद १८-१९ में। क्या-क्या अनुवाद मैंने इसमें किये जब मेरा ध्यान महत्त्वा इम ओर गया कि यह ईटस का जन्म-जातों का कवि है। मरी इच्छा हुई कि इसी कवि ईटस पर लिखा मरी गायप्रबंध भी प्रकाशित हो जाए और ईटस की कविताओं के मर अनुवाद का एक संग्रह भी। गायप्रबंध W B Yeats & Occultism प्रायः छप चुका है। अब तक मैं ईटस की १०१ कविताओं का अनुवाद कर चुका हूँ। जाना करता हूँ कि यह संग्रह भी '६५ के भीतर भीतर छप जाएगा।

ईटस की काव्यात्मक विशेषताओं से प्रभावित होकर ही मैंने उनका अपना विशेष अध्ययन का विषय बनाया था। गाय नीरम काम होता है पर मैंने उनका कविताओं में आनंद-पत्र उम किमी हूँ तब शरम बना लिया था। ईटस के प्रति जो कविता मैंने लिखी है उम इमका सबन है। मुझे लगा कि ईटस के काव्य का गुरार्दी ग अध्ययन करन, उम किमी हूँ तब समझन के कारण मैं उम अनूक्ति करन का अधिकारी हूँ। अनधिकार केष्टा करन में मुझे मराच ही हाना है—उम भी लगता है। मपकता का मरी दामना ग गीमिन हाना स्वानावित है।

प्रश्न—कविताओं के चुनाव में बौद्धता दृष्टिवाण रहा है? ईटस की कविता

स्वर के साथ सम्मिश्रण किया। हमारे यहाँ प्रयोगवाद के साथ बौद्धिकता आई और नई कविता के साथ अधोमुखी हो फायडीय हो गई। हमारे अधिकतर नए कवि अवचेतन की खान से बिंब, चित्र, प्रतीक, रूपक खोद-खादकर बाहर निकालने में लगे हुए हैं। इसकी तुलना एजरा के प्रारम्भिक Imagist movement के साथ की जा सकती है।

प्रश्न—अपनी अनुवाद प्रक्रिया तथा अनुवाद की कठिनाइयों के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य बतलाने की कृपा करें।

उत्तर—रूबाइयात उमर खैयाम से आरंभ करके अब तक के मेरे अनुवादों में पर्याप्त विविधता है। अनुवाद प्रायः मैंने उन्हीं रचनाओं का किया है जो मुझे प्रिय हैं। उनको अपनी भाषा में रखकर मैंने उनके साथ अधिक निकटता का अनुभव करने का प्रयत्न किया है। शब्द-शक्ति, पक्ति-यक्ति विचार और भाव शृंखला को पकड़े हुए किसी महान लेखक की रचना प्रक्रिया का अनुसरण करना इतना लोमहृपक अनुभव है कि उसे तमय अनुवादक ही जान सकता है। प्रयत्न तो मेरा यही रहा है कि मूल लेखक से तमय हो सकूँ—उसकी सृजन-मनस्थिति से। ऐसा संभव होने पर अनुवाद सहज हो जाता है। यहाँ तक कि शाब्दिक सीमाएँ टूट जाती हैं और अनुवादक स्वतंत्र सजक के अधिकार से अपना काम करने लगता है। शाब्दिकता अनुवाद की सबसे निचली श्रेणी है। इसपर पाँच जमाएँ रहने का आग्रह मेरा कभी नहीं रहा। शब्द जिसके उपकरण या साधन हैं उसे पकड़ने, आत्मसात करने और फिर उसे अपनी भाषा के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयत्न मैंने किया है। अनुवाद के लिए आदर्श तो यही है कि वह अनुवाद न मालूम हो। मरा सफलता मेरी क्षमता से सीमित है।

प्रश्न—क्या सचमुच अनुवाद का कोई साहित्यिक मूल्य है अनुवादित भाषा के इतिहास में? (अर्थात् हिन्दी के इतिहास में)

उत्तर—निश्चय विशेषकर विकासोन्मुख भाषाओं के इतिहास में। हिन्दी ऐसी ही भाषा है। अनुवाद से भाषाओं की अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ती है। भाव विचार के नए वेद खुलते हैं। मूल्यवान अनुवादों से सजनशील साहित्य निश्चित रूप से प्रभावित होता है। अनुवाद किसी भाषा का दूसरी भाषा की ओर मत्री का हाथ है—वह जितनी दूर और जितनी दिशाओं में बढ़ाया जा सके बढ़ाया जाना चाहिए। सहयोग-महकारिता भाषा के विकास के लिए भी आवश्यक है—भाषा में साहित्य भी सन्निहित है।

व्यक्तिगत रूप से लेखक की सजन-साधना में भी अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्यकार प्रभावित होगा तो साहित्य कैसे गही होगा।

प्रश्न—हिन्दी के नए अनुवादकों को आपकी सलाह?

उत्तर—सलाह देने का सबसे अच्छा उपाय है उदाहरण उपस्थित करना। मैंने

अपनी योग्यता क्षमता के अनुसार इस दिशा में जो कुछ किया है उसे जाय चाहता उदाहरण ममक लें। त्रुटिपूर्ण उदाहरणों में भी कुछ सीखा जा सकता है।

प्रश्न—अगर कोई बात जो आपकी दृष्टि में महत्वपूर्ण हो उपयुक्त सर्वभूमि में।

उत्तर—मैं चाहता हूँ हिंदी का अनुवाद साहित्य बहुत बहुत-बहुत बढ़े। उसमें प्राचीन साहित्य, पणियायी साहित्य, यारोपीय साहित्य, विद्वत् साहित्य में जो कुछ श्रेष्ठ है सब अनूहित होकर आए। इसने लिए यह आवश्यक है कि हमारे लेखकों को अपनी भाषा के अतिरिक्त एकाधिक भाषाओं का पूरा ज्ञान हो जिससे वे उत्तम रचनाओं का अनुवाद करते रहें। अच्छा अनुवादक भी बतानी जाना है जो अच्छा मौलिक लेखक है।

१८-८-६५

◇ ◇ ◇

अपना योग्यता समता व अनुसार इस सिद्धांत जो बुद्ध विद्या है उसे आप चाह तो उदाहरण समझ लें। बुद्धिपूर्ण उदाहरण से भी बुद्ध सीखा जा सकता है।

प्रश्न—आप कोई बात जो प्रायकी दृष्टि में महत्वपूर्ण हो उपपुस्तक सभ में।

उत्तर—मैं चाहता हूँ हिन्दी का अनुवाद साहित्य बहुत-बहुत बढ़ोत बढ़े। उसमें प्राचीन साहित्य, एशियाई साहित्य, यारोपीय साहित्य, विद्वत् साहित्य में जो कुछ थोड़ा ही सब अनुन्त होकर आए। इसके लिए यह आवश्यक है कि हमारे लेखकों को अपनी भाषा के अतिरिक्त एकाधिक भाषाओं का पूरा ज्ञान हो जिनमें से वे उत्तम रचनाओं का अनुवाद करते रहें। अच्छा अनुवादक भी नहीं जानता है जो अच्छा मौलिक लेखक हो।